

30



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 384/
No. 384

नई दिल्ली, शुक्रवार, अप्रैल 16, 2004/चैत्र 27, 1926
NEW DELHI, FRIDAY, APRIL 16, 2004/CHAITRA 27, 1926

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 16 अप्रैल, 2004

क्रि.आ. 592(अ).—दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश माननीय न्यायमूर्ति आर. सी. जैन की अध्यक्षता में गठित अधिकरण, जिसको विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 की धारा 4(1) के अन्तर्गत यह न्याय-निर्णय करने सम्बन्धी मामला भेजा गया था कि संगमों नामशः नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा तथा ऑल त्रिपुरा टाइगर फोर्स को विधिविरुद्ध घोषित किए जाने के पर्याप्त कारण हैं या नहीं, के आदेश को विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 की धारा 4(4) के अन्तर्गत आम जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है :—

विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 के अन्तर्गत गठित अधिकरण के समक्ष

(माननीय न्यायमूर्ति श्री आर.सी. जैन)

संगमों, नामशः

'नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा'

एवं 'ऑल त्रिपुरा टाइगर फोर्स'

के मामले में

तथा

विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 की धारा 4(1) के अन्तर्गत संदर्भित मामले में

आदेश

1. केन्द्र सरकार ने विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 (1967 का 37) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'अधिनियम' कहा गया है) की धारा 3 की उपधारा (1) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए दिनांक 3 अक्टूबर, 2003 की राजपत्र अधिसूचना सं. का.आ. 1164(अ) के द्वारा 'नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा' एवं 'ऑल त्रिपुरा टाइगर फोर्स' (जिन्हें संक्षेप में क्रमशः 'एन.एल.एफ.टी.' एवं 'ए.टी.टी.एफ.' कहा गया है) को विधिविरुद्ध संगम घोषित किया था तथा उक्त अधिसूचना में उल्लिखित परिस्थितियों के आलोक में यह मत बनाया था कि 'एन.एल.एफ.टी.' तथा 'ए.टी.टी.एफ.' को तत्काल प्रभाव से विधिविरुद्ध संगम घोषित करना आवश्यक है तथा तदनुसार, केन्द्र सरकार ने, अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) के परन्तुक द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निदेश दिया था कि उक्त अधिसूचना,

उक्त अधिष्ठापन की धारा 4 के अंतर्गत किए जाने वाले किसी भी आदेश के अधीन, सरकारी राजपत्र में इसके प्रकाशन की तारीख से लागू होगी। दिनांक 3 अक्टूबर, 2003 की उक्त राजपत्र अधिसूचना सं० का०आ० 1164(अ) का पाठ निम्नानुसार है:

**"गृह मंत्रालय
अधिसूचना
नई दिल्ली, दिनांक 3 अक्टूबर, 2003**

का०आ० 1164(अ)- यतः नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा (जिसे इसमें इसके पश्चात् एन०एल०एफ०टी० कहा गया है) का स्पष्ट लक्ष्य त्रिपुरा के अन्य सशस्त्र अलगाववादी संगठनों के सहयोग से और सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से त्रिपुरा को भारत से अलग करके एक स्वतंत्र "बोरोक्लैण्ड त्रिपुरा" की स्थापना करना तथा अलगाव के लिए त्रिपुरा के स्थानीय लोगों को भड़काना और इस प्रकार त्रिपुरा को भारत से अलग करना है;

और यतः ऑल त्रिपुरा टाइगर फोर्स (जिसे इसमें इसके पश्चात् ए०टी०टी०एफ० कहा गया है) का स्पष्ट लक्ष्य पूर्वोत्तर क्षेत्र के अन्य सशस्त्र अलगाववादी संगठनों के सहयोग से त्रिपुरा, असम, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड, मेघालय तथा अरुणाचल प्रदेश को शामिल करके सात प्रदेशों के एक पृथक राष्ट्र की स्थापना करना है, जिससे उक्त राज्य भारत से अलग हो सकें तथा इन राज्यों को भारत संघ से अलग करने के लिए सशस्त्र संघर्ष को जारी रखना है और इस प्रकार इन राज्यों को भारत से अलग करना है;

और यतः केन्द्र सरकार का मत है कि एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ०:

- (i) अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विद्रोही तथा हिंसक गतिविधियों में लिप्त हैं और इस प्रकार इन्होंने सरकार के प्राधिकार को क्षति पहुंचाई है और लोगों में डर एवं आतंक फैलाया है,
- (ii) ने यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट आफ असम (उल्फा) और मणिपुर के मैतेई उग्रवादी गुटों जैसे अन्य विधिविरुद्ध संगठनों का समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से उनसे संबंध स्थापित किए हैं,
- (iii) हाल में पिछले कुछ समय से अपने उद्देश्य एवं लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कई हिंसक तथा विधिविरुद्ध गतिविधियों में लिप्त रहे हैं जो कि भारत की संप्रभुता तथा अखंडता के लिए हानिकारक हैं।

और यतः केन्द्र सरकार का यह भी मत है कि हिंसक एवं विधिविरुद्ध गतिविधियों में निम्नलिखित शामिल है:-

- (क) नागरिकों तथा पुलिस एवं सुरक्षा बलों के कार्मिकों की हत्या,
- (ख) त्रिपुरा में व्यवसायियों एवं व्यापारियों सहित जनता से जबरन धन ऐंठना,
- (ग) गुप्त एवं अवैध माध्यमों से भारी मात्र में अत्याधुनिक शस्त्र एवं गोलाबारूद प्राप्त करना तथा उन्हें गुप्त रूप से पड़ोसी देश के माध्यम से त्रिपुरा में लाना,
- (घ) सुरक्षित आश्रय, प्रशिक्षण, शस्त्र एवं गोलाबारूद आदि की प्राप्ति के प्रयोजन के लिए पड़ोसी देश में शिविर स्थापित करना तथा उन्हें बनाए रखना,
- (ङ) त्रिपुरा में जनजातीय एवं गैर जनजातीय समुदायों के बीच सांप्रदायिक संघर्ष उत्पन्न करने एवं उसमें वृद्धि करने के लिए त्रिपुरा के दूसरे जनजातीय उग्रवादी संगठनों के साथ संबंध स्थापित करना और उन्हें बनाए रखना ।

और यतः केन्द्र सरकार का मत है कि एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० की उपरोक्त गतिविधियां भारत की संप्रभुता एवं अखंडता के प्रतिकूल हैं तथा ये विधिविरुद्ध संगम हैं,

अतः अब विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 (1967 का 37) की धारा 3 की उपधारा (1) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार, एतद्वारा, नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा (एन०एल०एफ०टी०) और ऑल त्रिपुरा टाइगर फोर्स (ए०टी०टी०एफ०) को विधिविरुद्ध संगम घोषित करती है,

और यतः केन्द्र सरकार का यह भी मत है कि यदि इन पर तत्काल नियंत्रण न किया गया तो एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० को निम्नलिखित कार्यों के करने का अवसर मिल जाएगा:-

- (i) अलगाववादी, विद्रोही, आतंकवादी एवं हिंसक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए अपने काडर को संगठित करना,
- (ii) भारत की संप्रभुता एवं राष्ट्रीय अखण्डता के प्रति वैमनस्य भाव रखने वाली शक्तियों के साथ मिलकर राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का प्रचार करना,

- (iii) अधिकाधिक नागरिकों की हत्याएं करने में संलिप्त रहना तथा पुलिस एवं सुरक्षा बलों के कार्मिकों को निशाना बनाना,
- (iv) अंतर्राष्ट्रीय सीमा पार से और अधिक गैर कानूनी हथियार एवं गोलाबारूद-प्राप्त करना और लाना,
- (v) अपनी गतिविधियों के लिए जनता से बड़ी राशि इकट्ठा करना तथा जबरन धन ऐंठना ।

और यतः उपरोक्त परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में, केन्द्र सरकार की यह पक्की राय है कि एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० को तत्काल प्रभाव से विधिविरुद्ध संगम घोषित करना आवश्यक है, और तदनुसार, उक्त धारा 3 की धारा 3 के परन्तुक क्लॉस प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्र सरकार, एतद्वारा निदेश देती है कि यह अधिसूचना उक्त अधिनियम की धारा 4 के अंतर्गत किए जाने वाले किसी भी आदेश के अध्याधीन, सरकारी राजपत्र में इसके प्रकाशन की तारीख से लागू होगी ।

[फा.सं. 9/6/2003-एन.ई.1]

राजीव अग्रवाल, संयुक्त सचिव

2. इसके पश्चात् केन्द्र सरकार ने अधिनियम की धारा 5 की उपधारा (1) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए दिनांक 31 अक्टूबर, 2003 की अधिसूचना सं० का० आ० 1260(अ) के द्वारा अधोहस्ताक्षरी के हस्ताक्षर से यह न्याय-निर्णय किए जाने के उद्देश्य से "विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिकरण" (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'अधिकरण' कहा गया है) का गठन किया था कि 'एन०एल०एफ०टी०' और 'ए०टी०टी०एफ०' को विधिविरुद्ध संगम घोषित किए जाने के पर्याप्त कारण हैं या नहीं । दिनांक 31 अक्टूबर, 2003 की उक्त अधिसूचना सं० का० आ० 1260(अ) का पाठ निम्नानुसार है:

"गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, दिनांक 31 अक्टूबर, 2003

का० आ० 1260 (अ) - विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 (1967 का 37) की धारा 5 की उपधारा (1) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार, एतद्वारा, यह न्याय-निर्णय करने के लिए कि नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ

त्रिपुरा एवं आल त्रिपुरा टाइगर फोर्स को विधिविरुद्ध संगम घोषित करने के पर्याप्त कारण हैं अथवा नहीं, एतद्वारा दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री आर०सी० जैन की अध्यक्षता में एक "विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिकरण" का गठन करती है।

[फा.सं. 9/6/2003-एन.ई.1]

राष्ट्रीय अग्रवाल, संयुक्त सचिव

3. दिनांक 3 नवम्बर, 2003 के मन्त्र सं० 9/6/2003-एन.ई. 1 के द्वारा अधिनियम की धारा 4(1) के अंतर्गत केन्द्र सरकार से एक पत्र तथा संक्षिप्त विवरण प्राप्त हुआ था जिसमें 'एन०एल०एफ०टी०' और 'ए०टी०टी०एफ०' के उद्देश्यों/लक्ष्यों एवं हिंसक गतिविधियों का खुलासा किया गया है। इस विवरण में निम्नलिखित प्रमाण एवं आरोपों का उल्लेख किया गया है:-

1. त्रिपुरा पिछले 20 वर्षों से विद्रोह का सामना कर रहा है। यद्यपि लगभग 20 सशस्त्र जनजातीय संगठनों की स्पष्ट तौर पर पहचान की गई है किन्तु अधिकांश हत्याओं के लिए नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा तथा आल त्रिपुरा टाइगर फोर्स ही जिम्मेदार हैं तथा उनकी विचारधारा ही ऐसी है कि उनके मुख्य कार्यकलाप आर्थिक लाभ प्राप्त करने हेतु हत्या, लूटखसोट, जबरदस्ती धन ऐंठने और अपहरण करने आदि तक ही सीमित रह गए हैं। इनकी हिंसा का मुख्य निशाना गैर-जनजातीय लोग होते हैं।
2. नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा (एन०एल०एफ०टी०) तथा आल त्रिपुरा टाइगर फोर्स (ए०टी०टी०एफ०) दोनों त्रिपुरा को शेष भारत से अलग करने तथा एक पृथक देश बनाने की मांग करके अलगाववादी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देते रहे हैं। जहां एन०एल०एफ०टी० अपनी स्थापना के समय से ही एक पृथक देश की मांग करता रहा है, वहीं ए०टी०टी०एफ० की अलगाववादी प्रवृत्तियां 1997 में इसके राजनैतिक विंग त्रिपुरा पीपुल्स डेमोक्रेटिक फ्रंट (टी०पी०डी०एफ०) के गठन के समय से अधिक स्पष्ट हुई हैं जो सशस्त्र आन्दोलन के जरिए 'राष्ट्रीय स्वतंत्रता' प्राप्त करने की बात करता है तथा भारतीय सेना/सुरक्षा बलों को 'भारतीय आधिपत्य बल' तथा भारत की स्वतंत्रता को अपनी 'औपनिवेशिक गुलामी' कहता है। ए०टी०टी०एफ० त्रिपुरा के भारत में विलय का भी विरोध करता रहा है। ये दोनों संगठन लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई तथा विधिसम्मत तरीके से गठित सरकारों को उखाड़ फेंकने के अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के साधन के रूप में न केवल सशस्त्र क्रान्ति एवं हिंसा में विश्वास करते हैं बल्कि ये बार-बार हिंसा फैलाने, निर्दोष लोगों की हत्या करने तथा नृजातीय अशांति फैलाने में भी संलिप्त रहे हैं। ये दोनों संगठन राष्ट्रीय दिवस समारोहों का भी बहिष्कार करते रहे हैं।

3. राज्य में 31 पुलिस थानों को पूर्णतः/आंशिक रूप से अशांत घोषित किए जाने के बावजूद एन0एल0एफ0टी0 तथा ए0टी0टी0एफ0 दोनों संगठन सतत रूप से हिंसा एवं लूट-खसोट कर रहे हैं। जहां एन0एल0एफ0टी0 द्वारा की जाने वाली हिंसा का स्तर अत्यन्त ऊंचा है, वहीं ए0टी0टी0एफ0 द्वारा की जाने वाली हिंसा में भी वृद्धि होती रही है। वास्तव में वर्ष 1999-2001 की तरह ही इस वर्ष भी पूर्वोत्तर के सभी आतंकवादी संगठनों में एन0एल0एफ0टी0 द्वारा सर्वाधिक हिंसा की गई है। ये दोनों संगठन गैर जनजातियों, विशेष रूप से बंगालियों को त्रिपुरा से बाहर करने की वकालत करते रहे हैं तथा अवसर मिलते ही उन पर हमला करते रहे हैं जिससे मामूली उकसावे पर प्रायः जनजातीय संघर्ष/तनाव बढ़ते रहे हैं। इन आतंकवादी संगठनों की गतिविधियों के कारण राज्य में जनजातीय एवं गैर जनजातीय जनता के मध्य भारी तनाव बना हुआ है।
4. ए0टी0टी0एफ0 और एन0एल0एफ0टी0 की हिंसा का विवरण नीचे दिया गया है:

वर्ष	ए0टी0टी0एफ0 एवं एन0एल0एफ0टी0 द्वारा मारे गए व्यक्तियों (सुरक्षा बल/पुलिस) की संख्या	
	ए0टी0टी0एफ0	एन0एल0एफ0टी0
1999	42(7)	154(33)
2000	23(4)	216(11)
2001	47(9)	172(26)
2002	48(1)	114(40)
2003 (31 मई तक)	39(6)	70(10)

5. वर्ष 1993 के मध्य में गठित ए0टी0टी0एफ0 के पास लगभग 350 दुर्दान्त सशस्त्र कार्यकर्ता हैं और इसका नेतृत्व रणजीत देववर्मा के हाथ में है। यह पूरे धलाई जिले, खोवई, कल्याणपुर, तेलिमुरा, जिरानिया, तकरजला तथा 40 त्रिपुरा जिले के सिधार्थ थाना क्षेत्रों, कैलाशहर, फटिकराय तथा उत्तरी त्रिपुरा जिले के कंचनपुर थाना क्षेत्रों और 40 त्रिपुरा जिले के बीरगंज, आर0के0 पुर, ताइडू और ओम्पी थाना क्षेत्रों में सक्रिय है। 1989 में गठित एन0एल0एफ0टी0 का नेतृत्व विश्व मोहन देववर्मा के हाथ में है और इसके काइरों की अनुमानित संख्या 600 है तथा इसके पास 350 शस्त्र हैं। ऐसा समझा जाता है कि इसका प्रभाव संपूर्ण धलाई जिले, 40 त्रिपुरा जिले के कल्याणपुर एवं तकरजला थाना क्षेत्र, उत्तरी त्रिपुरा जिले के कंचनपुर और वाधमान थाना क्षेत्र और 40 त्रिपुरा जिले के बीरगंज, ताइडू, नूतन बाजार, शांतिरबाजार और ओम्पी थाना क्षेत्रों में है। फरवरी, 1997 में 19 थाना क्षेत्रों एवं उसके बाद और अधिक क्षेत्रों को अशांत घोषित करने से एन0एल0एफ0टी0 के कार्यकलापों पर किसी तरह का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। इसके विपरीत इस संगठन ने

विभिन्न क्षेत्रों में खुद को सुदृढ़ बनाया है और यह त्रिपुरा के एक बड़े आतंकवादी संगठन के रूप में उभरा है।

6. एनटीटीओएफओ और एनओएलओएफओटीओ दोनों के बंगलादेश में प्रशिक्षण शिविर और छिपने के ठिकाने हैं और ये हिंसा की बड़ी वारदातों के बाद शरण लेने के लिए प्रायः बंगलादेश के भू-भाग का प्रयोग करते हैं। इनमें से अधिकांश घटनाओं की योजनाएं बंगलादेश में बनायी गई हैं और ये बंगलादेश की भूमि से ही कार्यान्वित की गई हैं। उन्होंने भारी मात्रा में अत्याधुनिक हथियार प्राप्त कर लिए हैं और बताया जाता है कि ये पूर्वोत्तर के अन्य विद्रोही गुटों से घनिष्ठ संपर्क बनाए हुए हैं। हाल की रिपोर्टों से त्रिपुरा में अपने अभियानों में एक और एनओएलओएफओटीओ और एनओएसओसीओएनओ (आईओ/एमओ) तथा दूसरी ओर एनटीटीओएफओ और उल्फा के बीच बढ़ते संबंधों का पता चलता है।
7. इन जनजातीय उग्रवादियों/सशस्त्र शरारती तत्वों ने पुलिस/सुरक्षा बलों तथा निर्दोष गैर-जनजातीय (विशेष रूप से बंगालियों) पर हमला करने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई ताकि उन्हें त्रिपुरा छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सके। इन आतंकवादियों के शिकार अधिकांशतः गैर-जनजातीय लोग और विशेष रूप से बंगाली होते हैं। इससे राज्य में जनजातीय तथा गैर-जनजातीय लोगों के बीच काफी तनाव पैदा हो गया है जिसके परिणामस्वरूप नृजातिवाद की स्थिति पैदा हो गई है जिसके कारण थोड़े से उकसावे पर ही जातीय झगड़े हो जाते हैं।
8. पहले एनओएलओएफओटीओ और एनटीटीओएफओ को 3 अक्टूबर, 2001 से विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 के तहत 'विधिविरुद्ध संगम' घोषित किया गया था। इस घोषणा को 3 अक्टूबर, 2003 से आगे और 2 वर्ष की अवधि के लिए बढ़ाया गया है।
9. इस तथ्य के बावजूद कि एनओएलओएफओटीओ और एनटीटीओएफओ पर विगत छः वर्षों से लगातार प्रतिबंध लगा हुआ है, त्रिपुरा में जनजातीय विद्रोह अभी भी सुरक्षा की दृष्टि से सर्वाधिक गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। एनओएलओएफओटीओ और एनटीटीओएफओ दोनों लगातार गैर-कानूनी ढंग से बड़े पैमाने पर कर वसूली, जबरन भन ऐंठने और यहां तक फिरोती के लिए अपहरण करके धन जुटाने में संलिप्त रहे हैं। अतः प्रतिबंध को और आगे बढ़ाना का निर्णय लेने से पहले निम्नलिखित तथ्यों पर विचार किया गया है:-
 - i. एनओएलओएफओटीओ और एनटीटीओएफओ दोनों के पास लगातार अपने-अपने स्वयंभू संविधान हैं जिनमें पृथक जनजातीय राष्ट्र की मांग करके स्पष्ट तौर पर त्रिपुरा को भारत से पृथक किए जाने को उनका अंतिम लक्ष्य कहा गया है।

- ii. एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० बड़े पैमाने पर हिंसा की कई घटनाओं, सेना और पुलिस कार्मिकों से हथियार और गोला-बारूद लूटने के लिए जिम्मेदार हैं जिनमें सेना और पुलिस के कई कार्मिकों और नागरिकों की जानें गई हैं।
 - iii. इसके अतिरिक्त, एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० हथियार और गोला-बारूद प्राप्त करने तथा अपने नेताओं और कार्यकर्ताओं की व्यवस्था के लिए लगातार, जबरन धन ऐंठने और अवैध रूप से कर वसूलने में संलिप्त रहे हैं।
 - iv. एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० ने पूर्वोत्तर के अन्य अलगाववादी संगठनों से संबंध स्थापित किए हैं। बताया गया है कि एन०एल०एफ०टी० ने नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नागालैंड (एन०एस०सी०एन० (आई./एम.)) के इस्साक-मुइवाह गुट के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित किए हैं। दूसरी ओर ए०टी०टी०एफ० ने यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (यू०एल०एफ०ए०) और मणिपुर के मैतेई उग्रवादी गुटों के साथ भी संबंध बनाए हैं।
 - v. ए०टी०टी०एफ० और एन०एल०एफ०टी०, दोनों के ही बंगलादेश में प्रशिक्षण शिविर और छिपने के स्थान हैं और हिंसा की बड़ी वारदात करने के बाद दोनों ही आश्रय लेने के लिए अक्सर बंगलादेश की जमीन का इस्तेमाल करते रहे हैं। अधिकांश वारदातों की योजनाएं बंगलादेश की जमीन से ही बनाई जाती हैं और वहीं से कार्यान्वित की जाती हैं।
 - vi. एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० लगातार अवैध रूप से हथियार और गोलाबारूद प्राप्त करते रहे हैं। इन्हें या तो विदेशों से हथियारों के अवैध सौदागरों से खरीदकर देश में तस्करी की जा रही है या विभिन्न सुरक्षा बलों से छीना जा रहा है।
- 10 एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० पर आगे और प्रतिबंध लगाने के विषय पर त्रिपुरा सरकार, रक्षा मंत्रालय, सेना मुख्यालय, आसूचना ब्यूरो (आई०बी०), मंत्रिमंडल सचिवालय (आर. एंड ए.डब्ल्यू.), केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी०आर०पी०एफ०) और सीमा सुरक्षा बल के विचार मांगे गए थे जिन्हें संक्षिप्त रूप में नीचे प्रस्तुत किया गया है:
- i. त्रिपुरा सरकार ने अनुरोध किया है कि एक उपयुक्त अधिसूचना जारी करके एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० पर 2 अक्टूबर, 2003 के बाद भी 2 वर्ष की और अवधि के लिए प्रतिबंध जारी रखा जाए।

- ii. रक्षा मंत्रालय ने सिफारिश की है कि एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० को 2 अक्टूबर, 2003 के बाद भी "विधिविरुद्ध संगम" के रूप में घोषित कर अधिसूचना का विस्तार किया जाए।
- iii. सेना मुख्यालय ने सिफारिश की है कि "विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 के तहत एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० को "विधिविरुद्ध संगम" घोषित करने की अधिसूचना का 2 अक्टूबर, 2003 को समाप्त अवधि के बाद भी 2 वर्ष की और अवधि के लिए विस्तार किया जाए।
- iv. आसूचना ब्यूरो ने अपने नोट में उल्लेख किया है कि दोनों संगठनों पर प्रतिबंध जारी रहना चाहिए।
- v. मंत्रिमंडल सचिवालय (आर. एंड ए.डब्ल्यू.) ने अपने नोट में बताया है कि इन संगठनों द्वारा किए जा रहे विध्वंसकारी कार्यकलापों को ध्यान में रखते हुए, जिनके कारण राज्य में कानून और व्यवस्था की गंभीर समस्या बनी हुई है, यह न्यायोचित होगा कि एन०एल०एफ०टी० और आर०पी०ए०, जो पहले ए०टी०टी०एफ० था, विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 के तहत विधिविरुद्ध संगम घोषित करने संबंधी अधिसूचना का 2 अक्टूबर, 2003 के बाद भी विस्तार किया जाए।
- vi. केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने राज्य में एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० के उग्रवादियों के विरुद्ध प्रभावी विद्रोह-विरोधी अभियान चलाने के लिए इन संगठनों को 'विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 के तहत 'विधिविरुद्ध संगम' घोषित करने संबंधी अधिसूचना का 2 अक्टूबर, 2003 के बाद भी विस्तार करने की सिफारिश की है।
- vii. सीमा सुरक्षा बल ने एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० को 'विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 के तहत 'विधिविरुद्ध संगम' के रूप में घोषित करने की अधिसूचना का 2 अक्टूबर, 2003 के बाद भी विस्तार किए जाने की सिफारिश की है। उन्होंने अपने नोट में बताया है कि चूंकि एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० अभी भी हिंसा, अपहरण और जबरन धन ऐंठने के कार्यों में लिप्त हैं इसलिए सीमावर्ती क्षेत्र में शांति नहीं है। इस प्रकार वहां पर असुरक्षित वातावरण बना हुआ है। इन उग्रवादी संगठनों ने बंगलादेश के भू-भाग में अपने शिविर स्थापित किए हुए हैं और ये उन विदेशी एजेंसियों का समर्थन प्राप्त करते हैं जो भारत के प्रति नापाक इरादे रखती हैं।

11. एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० को विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 के तहत 3 अक्टूबर, 2003 से आगे "विधिविरुद्ध संगम" घोषित करने के समर्थन में संक्षेप में निम्नलिखित कारण सूचीबद्ध किए जाते हैं:-
- i. एन०एल०एफ०टी० द्वारा भारत से त्रिपुरा के अलगाव तथा ए०टी०टी०एफ० द्वारा सेवन सिस्टर्स के पृथक राष्ट्र के गठन की नीति को अपनाए रखना;
 - ii. भारत की संप्रभुता तथा अखंडता के लिए प्रतिकूल गतिविधियों में शामिल रहना;
 - iii. अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के साधनों के रूप में सशस्त्र कार्रवाई के माध्यम से हिंसा तथा आतंक को अपनाए रखना;
 - iv. व्यावसायिक, व्यापारिक तथा यहां तक कि सरकारी कर्मचारियों सहित आम जनता से बड़े स्तर पर जबरन धन ऐंठना तथा अवैध कर वसूली;
 - v. पूर्वोत्तर के अन्य विद्रोही संगठनों के साथ संबंध बनाना तथा उनका समर्थन करना। जहां एन०एल०एफ०टी० ने नेशनल सोशलिस्ट काउन्सिल ऑफ नागालैंड (एन०एस०सी०एन० (आई/एम)) के इसाक-मुईवाह गुट के साथ संबंध बना लिए हैं वहीं ए०टी०टी०एफ० ने यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (उल्फा) तथा मणिपुर के मैतई उग्रवादी संगठनों के साथ संबंध विकसित कर लिए हैं।
 - vi. पड़ोसी बंगलादेश में अपने शरण-स्थलों एवं सुरक्षित आश्रयों तथा प्रशिक्षण शिविरों को बनाए रखना;
 - vii. गुप्त तरीकों से तथा विभिन्न सुरक्षा बलों से छीनकर भारी मात्रा में अत्याधुनिक शस्त्र एवं गोलाबारूद जुटाना।
12. उपर्युक्त के मद्देनजर दिनांक 3 अक्टूबर, 2001 की पहली की अधिसूचना की वैधता समाप्त होने के बाद नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा (एनएलएफटी) तथा ऑल त्रिपुरा टाइगर फोर्स (एटीटीएफ) दोनों को विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 की धारा 3(3) के परंतुक के साथ पठित धारा 3(1) के अंतर्गत पुनः 'विधिविरुद्ध संगम' घोषित करना आवश्यक समझा गया। इससे उनके सरेआम अपने नकारात्मक उद्देश्यों और कार्यकलापों का प्रचार करने तथा जनता का समर्थन प्राप्त करने एवं जनसमर्थन प्राप्त करने से निरूत्साहित होने की संभावना है। इससे ए०टी०टी०एफ० तथा एन०एल०एफ०टी० के समर्थकों को भी उन्हें आश्रय और सहायता देने से रोका जा सकेगा।"

4. संदर्भ प्राप्त होने पर, 14 नवम्बर, 2003 को अधिकरण द्वारा प्रारंभिक सुनवाई की गई जिसमें केन्द्र सरकार का प्रतिनिधित्व श्री के०के० सूद, भारत के अपर महा सॉलीसिटर तथा अन्य और श्री आर०आर० झा, निदेशक, गृह मंत्रालय ने किया जबकि त्रिपुरा शासन का प्रतिनिधित्व श्री गोपाल सिंह, अधिवक्ता तथा श्री के० अम्बुली, संयुक्त सचिव, गृह विभाग ने किया। अधिकरण ने उपर्युक्त संदर्भित अधिसूचनाओं और संदर्भों के आधार पर यह आदेश दिया कि अधिनियम की धारा 4(2) में यथा परिकल्पितानुसार एन०एल०एफ०टी० तथा ए०टी०टी०एफ० को अलग-अलग नोटिस जारी किए जाएं कि वे उक्त नोटिसों के तामील होने/प्रकाशित होने की तारीख से 30 दिन के भीतर कारण बताएं कि क्यों न उक्त संगमों को विधिविरुद्ध घोषित किया जाए और क्यों न अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (1) के अंतर्गत की गई घोषणा की पुष्टि किए जाने संबंधी आदेश जारी किया जाए। इन नोटिसों की, अन्य बातों के साथ-साथ, निम्नलिखित तरीके से तामील करने का निदेश दिया गया था:-

- i. इन नोटिसों की प्रतियां उपर्युक्त संगमों के कार्यालयों, यदि कोई हों, में किसी सुस्पष्ट स्थान पर चिपकायीं जाएं;
- ii. नगाड़ों की आवाज द्वारा अथवा लाउडस्पीकरों द्वारा नोटिस की विषय-वस्तु की उस क्षेत्र में उद्घोषणा की जाए जहां सामान्यतया ये संगम सक्रिय हैं;
- iii. दो राष्ट्रीय दैनिक समाचारपत्रों (अंग्रेजी तथा हिन्दी) में तथा त्रिपुरा राज्य में परिचालित होने वाले किसी लोकप्रिय स्थानीय समाचारपत्र में स्थानीय भाषा में इन नोटिसों को प्रकाशित किया जाए; तथा
- iv. आकाशवाणी पर उद्घोषणा की जाए तथा त्रिपुरा राज्य के स्थानीय प्रसारण एवं संप्रेषण केन्द्रों से दूरदर्शन पर प्रसारण किया जाए।

5. यह भी निदेश दिया गया था कि उक्त नोटिसों की तामील उपर्युक्त सभी तरीकों द्वारा दस दिन के भीतर कर ली जाए और नोटिसों की तामील से संबंधित अनुपालन की सूचना राज्य/केन्द्र सरकार के सक्षम प्राधिकारियों द्वारा तीन सप्ताह के भीतर अपने शपथपत्र दायर करके अधिकरण के रजिस्ट्रार को दे दी जानी चाहिए। केन्द्र सरकार तथा त्रिपुरा राज्य सरकार को भी अपने गवाहों के शपथ-पत्र तथा ऐसी सामग्री/दस्तावेज जिनके आधार पर आरोप लगाए गए थे तथा वे आधार जिनके बल पर उपर्युक्त संगमों को

विधिविरुद्ध संगम घोषित किया गया था, चार सप्ताह के भीतर दायर/प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था। श्री आर०आर० झा, निदेशक, गृह मंत्रालय, भारत सरकार तथा श्री आर०सी० पोद्दार, ज्वाइंट रेजिडेंट कमिश्नर, त्रिपुरा सरकार के शपथ-पत्र दायर किए गए थे जिनमें यह पुष्टि की गई थी कि विनिर्दिष्ट तरीकों के अनुसरण में इन संगमों के नाम, में नोटिस जारी/प्रकाशित कर दिए गए थे और उनके समर्थन में उद्धरणों और अन्य पत्रों की प्रतियां भी दायर की गई थीं।

6. अधिकरण द्वारा अगली सुनवाई 8 जनवरी, 2004 को की गई और अधिकरण ने पाया कि इन नोटिसों का विधिवत प्रकाशन किए जाने तथा आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर उचित प्रचार किए जाने के बावजूद एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० दोनों संगमों में से किसी ने भी नोटिस में निर्धारित समयावधि के अंतर्गत या सुनवाई की तारीख तक इस बात का उत्तर नहीं दिया कि उक्त संगमों को विधिविरुद्ध घोषित क्यों न किया जाए। इन संगमों का कोई भी प्रतिनिधि उस दिन या यहां तक कि उत्तरवर्ती सुनवाइयों के दिन भी अधिकरण के समक्ष उपस्थित नहीं हुआ। तथापि केन्द्रीय सरकार की ओर से गृह मंत्रालय में निदेशक श्री आर०आर० झा तथा त्रिपुरा राज्य की ओर से श्री आर०सी० पोद्दार, ज्वाइंट रेजिडेंट कमिश्नर, त्रिपुरा सरकार ने हलफनामे दायर किए। श्री के० अम्बुली, संयुक्त सचिव, गृह मंत्रालय, त्रिपुरा राज्य सरकार ने एक अनुपूरक हलफनामा भी दायर किया। केन्द्रीय सरकार और त्रिपुरा राज्य सरकार की ओर से किए जा रहे अनुरोध पर श्री आर०सी० पोद्दार के हलफनामे के अनुलग्नक-IV में अलिखित गवाहों के हलफनामे प्रस्तुत करने का मौका दिया गया तथा आवश्यकता पड़ने पर अन्य गवाहों के हलफनामे प्रस्तुत करने की छूट भी दी गई। समय बढ़ाया गया तथा संदर्भ के समर्थन में 21 गवाहों के हलफनामे दायर किए गए।

7. इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० त्रिपुरा राज्य में बड़े पैमाने पर सक्रिय हैं, अधिकरण की एक सुनवाई त्रिपुरा राज्य के मुख्यालय अगरतला में आयोजित करना आवश्यक समझा गया। तदनुसार सुनवाई की तारीख, समय और स्थान को विधिवत अधिसूचित करके अधिकरण ने 20 और 21 फरवरी, 2004 को प्रातः 11.00 बजे अगरतला के सर्किट हाउस में अपनी दो बैठकें कीं। बैठक स्थल पर पुकारे जाने के बावजूद दोनों दिन एन०एल०एफ०टी० और ए०टी०टी०एफ० दोनों संगमों

में से किसी की ओर से भी कोई प्रतिनिधि उपस्थित नहीं हुआ और इस तरह अगरतला में सुनवाई के दौरान भी दोनों संगमों के प्रतिनिधि उपस्थित नहीं हुए।

8. 20 फरवरी, 2004 को आयोजित सुनवाई में केन्द्रीय सरकार तथा त्रिपुरा राज्य की ओर से निम्नलिखित 12 गवाहों से पूछताछ की गई:-

- i. श्री के० अम्बुली, संयुक्त सचिव, गृह विभाग।
- ii. श्री आशुतोष जिन्दल, जिलाधिकारी एवं कलेक्टर, पश्चिम त्रिपुरा।
- iii. श्री बिजय कुमार नाग, एस०डी०पी०ओ०, जिरानिया।
- iv. श्री संकर देबनाथ, एस०डी०पी०ओ०, तेलियामुरा।
- v. श्री भास्कर चक्रवर्ती, निरीक्षक (सी०आई०डी०)।
- vi. श्री रणजीत देब, उप निरीक्षक (सी०आई०डी०)।
- vii. श्री प्रणब सेनगुप्ता, ओ०सी०, थाना तकरजाला।
- viii. श्री गणजय रियांग, ओ०सी०, लांगथराई घाटी।
- ix. श्री सनत पॉल, उप निरीक्षक (सतर्कता)।
- x. श्री बीर कुमार देबबर्मा, उपनिरीक्षक, थाना मनु।
- xi. श्री बाबुल दास, ओ०सी०, थाना कमालपुर, और
- xii. श्री देबाशीष बनर्जी, उप निरीक्षक, थाना पूर्वी अगरतला।

9. 20 फरवरी, 2004 को निम्नलिखित 7 सार्वजनिक गवाहों के बयान भी दर्ज किए गए:-

- i. श्री परेश सरकार।
- ii. श्री सुरेश सरकार।
- iii. श्री नरेन्द्र देबनाथ।
- iv. श्री प्रमोद सरकार।
- v. श्री बिशु कुमार देबबर्मा।
- vi. श्री प्रदीप देबनाथ, और
- vii. श्री निमाई दास।

10. 21 फरवरी, 2004 को आयोजित सुनवाई में निम्नलिखित तीन गवाहों से पूछताछ की गई:-

- i. श्री टी०बी० राय, पुलिस अधीक्षक, पश्चिमी त्रिपुरा।
- ii. श्री पुनीत रस्तोगी, पुलिस अधीक्षक (एस०बी०), त्रिपुरा, अगरतला, और
- iii. श्री बी०एन० देबवर्मा, पुलिस अधीक्षक (सी०आई०डी०), त्रिपुरा, अगरतला।

11. अधिकरण की अगली सुनवाई 5 मार्च, 2004 को दिल्ली में हुई जिसमें दो गवाहों अर्थात् श्री आर०सी० पोद्दार, ज्वाइंट रेजिडेंट कमिश्नर, त्रिपुरा सरकार और श्री आर०आर० झा, निदेशक (एन०ई० II), गृह मंत्रालय, भारत सरकार से क्रमशः राज्य सरकार और केन्द्रीय सरकार की ओर से पूछताछ की गई और उसके बाद केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार के अधिवक्ता ने अपने प्रमाण देना बंद कर दिया ।

12. श्री आर०सी० पोद्दार, ज्वाइंट रेजिडेंट कमिश्नर, त्रिपुरा सरकार ने उन विभिन्न घटनाओं और क्रियाकलापों के संबंध में अपने हलफनामे में उल्लिखित तथ्यों की पुष्टि की जिनमें उक्त संगठन संलिप्त रहे हैं । उक्त घटनाएं और क्रियाकलाप निम्नानुसार हैं:-

- i. पिछले विधान सभा चुनाव के दौरान ए०टी०टी०एफ० ने 2-3 दिसम्बर, 2001 को प्रकाशित अपने मुखपत्र "चवाबा" के जरिए फरवरी, 2003 में होने वाले चुनावों के बहिष्कार के लिए जनता का आह्वान किया ।
- ii. ए०टी०टी०एफ० ने अपने न्यूजलेटर 'चाउबा' और 'होमेहांग' में स्वतंत्रता दिवस समारोहों का बहिष्कार करने का आह्वान किया ।
- iii. अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ए०टी०टी०एफ० ने मणिपुर आधारित उग्रवादी संगठन एम०पी०एल०एफ० (मणिपुर पीपुल लिबरेशन फ्रंट) और उल्फा के साथ मिलकर जून के तीसरे सप्ताह में तीनों राज्यों में 'आपरेशन फ्रीडम' शुरू किया । 'आपरेशन फ्रीडम' के भाग के रूप में तीनों राज्यों में अनेक हिंसक वारदातें पहले ही की जा चुकी थीं ।
- iv. हाल ही की कुछ घटनाओं से यह पता चला है कि ए०टी०टी०एफ० भारी मात्रा में बारूदी सुरंगें, राकेट लांचर्स, आर०पी०जी० आदि प्राप्त करने में सफल रहा है जिनका इस्तेमाल वे

सुरक्षा बलों के विरुद्ध कर रहे हैं। इस बात की पुष्टि विभिन्न माध्यमों से प्राप्त विश्वसनीय सूचना से की गई है।

- v. पिछले गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस के दौरान ए0टी0टी0एफ0 और एन0एल0एफ0टी0 दोनों गुटों ने समारोहों का बहिष्कार करने का आह्वान किया और त्रिपुरा के भीतरी इलाकों में काले झंडों का प्रदर्शन किया ताकि इन अवसरों पर आयोजित किए जाने वाले समारोहों में हिस्सा लेने से जनता को रोका जा सके।

13. उन्होंने यह भी बताया कि ए0टी0टी0एफ0 और एन0एल0एफ0टी0 तथा उनके गुटों ने विदेशों में अपने शिविर स्थापित किए हैं जहां से वे त्रिपुरा के भीतर अपना अभियान चला रहे हैं। उन्होंने विदेशी एजेंसियों और अन्य भूमिगत गुटों अर्थात् उल्फा तथा एन0एस0सी0एन0 की सहायता से हथियार इकट्ठे कर लिए हैं और 'कर' के नाम पर आम जनता से जबरदस्ती धन ऐंठ रहे हैं।

14. उन्होंने यह भी बताया कि ए0टी0टी0एफ0 ने अपना नाम बदलकर रेवोल्यूशनरी पीपुल्स आर्मी (आर0पी0ए0) रख लिया है जैसा कि जांच के दौरान जप्त किए गए 3 अप्रैल, 2003 के इस संगठन के समाचार-पत्र "चावबा" से प्रमाणित होता है।

15. अपने शपथ-पत्र में उन्होंने एन0एल0एफ0टी0 द्वारा किए गए कुछ जघन्य अपराधों का ब्यौरा दिया है जो निम्नानुसार है:-

i. वर्ष 2002 में

दिनांक 03.02.2002 को लगभग 0815 बजे निरीक्षक हरी मोहन दास, प्रभारी अधिकारी, अम्बासा पुलिस स्टेशन, एस0डी0पी0ओ0, अम्बासा और त्रिपुरा राज्य राइफल (टी0एस0आर0) की एक प्लाटून के साथ विशेष आपरेशन के लिए सिब्बारी दामचेरा क्षेत्र की ओर जा रहे थे। लगभग 10.30 बजे जब यह दल शिब्बारी के निकट पहुंचा तो

एन0एल0एफ0टी0 उग्रवादियों के एक दल ने आधुनिक हथियारों से पुलिस दल पर गोलीबारी शुरू कर दी तथा पुलिस दल ने भी आत्मरक्षा के अधिकार का इस्तेमाल करते हुए गोलीबारी की। गोलीबारी के पश्चात जब क्षेत्र में खोजबीन की गई तो वहां से नेशनल लिब्रेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा के दो आतंकवादियों नामतः हरिपडा मलसुम पुत्र अमर माणिक मलसुम, कुकी तथा कुपी मलसुम पुत्र मनमोहन मलसुम के शव बरामद हुए। उस स्थान से नेशनल लिब्रेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा के कुछ दस्तावेज एवं एक चीनी लाईव ग्रेनेड भी बरामद किए गए। (अम्बस्सा पुलिस थाना मामला सं0 06/02, भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/353/307 के अंतर्गत तथा 27 शस्त्र अधिनियम 3/5 ई0एस0 अधिनियम तथा विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम की धारा 10/13)।

- ii. 09/02/2002 को के0रि0पु0ब0 की 51वीं बटालियन की एक प्लाटून ने उप-कमांडेंट श्री वी0पी0 सिंह के समादेश (नियंत्रणाधीन) से ग्राम हेरमा में ऑपरेशन शुरू किए। लगभग 1330 बजे के0रि0पु0ब0 को देखकर दो व्यक्तियों को भागते हुए देखा गया। जब केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने उन्हें चुनौती देने की कोशिश की तो उनमें से एक ने गोली चला दी तथा एक ग्रेनेड भी फेंका। आत्मरक्षा में के0रि0पु0ब0 ने गोलीबारी शुरू कर दी जिसके परिणामस्वरूप एक उग्रवादी मारा गया तथा दूसरे को गिरफ्तार कर लिया गया। तलाशी के दौरान गिरफ्तार किए गए रणजीत देबवर्मा से एक 0.32 रिवॉल्वर, 3 लाइव कारतूस, 1000/-रु० मूल्य की भारतीय मुद्रा तथा 19,000/-रु० मूल्य के बंगलादेशी टका बरामद किए गए। नेशनल लिब्रेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा की एक कर रसीद पुस्तिका एवं एक व्यक्तिगत डायरी भी बरामद की गई। शव की पहचान एन0एल0एफ0टी0 (एन0बी0) के ऑपरेशनल कमांडर मेजर बेंजामिन हरंखवाल के रूप में की गई। (भारतीय दंड संहिता की धारा 307, शस्त्र अधिनियम की धारा 25/27 और यू0एल0ए0(पी0) अधिनियम की धारा 10/13 के अंतर्गत बिशालगढ़ पुलिस थाने में दर्ज मामला सं0 08/02)।

- iii. 09/04/2002 को लगभग 1155 बजे असम राईफल्स (संक्षेप में एओआर) की 22वीं बटालियन का एक दल भरत चौधरी पारा की गश्त ड्यूटी कर रहा था। जब यह दल किसी सोयला राम देबबर्मा के घर के सामने से गुजर रहा था तो उग्रवादियों के एक दल ने असम राईफल्स की टोली पर गोली चला दी। परिणामस्वरूप राईफल मैन आरओसीओ जोशी संओ 2200936 को चोटें आईं। आत्मरक्षा में असम राईफल्स दल ने जवाबी कार्रवाई की जिसके परिणामस्वरूप ज्योति रंजन देबबर्मा नाम का एक उग्रवादी मारा गया तथा अन्य उग्रवादियों को गिरफ्तार कर लिया गया। तलाशी के दौरान (i) एक एओकेओ 56 राईफल, (ii) एओकेओ 56 के 56 कारतूस, (iii) हथगोले, (iv) 1906 रू० मूल्य की भारतीय मुद्रा (v) कर वसूली पत्र तथा अन्य आपत्तिजनक वस्तुएं बरामद की गईं। (भारतीय दंड संहिता की धारा 353/326/307, शस्त्र अधिनियम की धारा 27/28 और यूओएलओएओ(पीओ) अधिनियम की धारा 10/13 के अंतर्गत सालेमा पुलिस थाने में दर्ज मामला संओ 10/02)।
- iv. 16/04/2002 को लगभग 0100 बजे ओ./सी. एस.टी.बी. पुलिस थाने को यह सूचना मिली कि 17.04.2002 को उग्रवादियों का एक दल अंशदान इकट्ठा करने के लिए खाथालिया पारा आएगा। तदनुसार ओ./एस. शांतीर बाजार (संक्षेप में एस.टी.बी.) पुलिस थाना ने त्रिपुरा स्टेट राईफल्स (संक्षेप में टी.एस.आर.) के कार्मिकों तथा कांस्टेबलों के साथ जंगल मार्ग पर प्रतीक्षा की। 17.04.2002 को लगभग 0600 बजे ओ./सी. एस.टी.एफ. ने एनओएलओएफओटीओ के 4 सशस्त्र आतंकवादियों को खाथालिया पारा की तरफ जाते हुए देखा। उनका सामना किए जाने पर आतंकवादी दल ने पुलिस दल पर गोलीबारी की। पुलिस ने भी गोलीबारी शुरू कर दी जिसके फलस्वरूप रवीन्द्र रेआंग नामक एक आतंकवादी की मौके पर ही मृत्यु हो गई। उसके पास से एक देशी बन्दूक, एक खाली कारतूस, बिजली की तार सहित दो डिटोनेटर्स, एनओएलओएफओटीओ का अंशदान नोट इत्यादि बरामद हुए। (भारतीय दंड संहिता की धारा 148/145/353/307, शस्त्र अधिनियम की धारा 25 (ख),

27 और यू0एल0ए0(पी0) अधिनियम की धारा 10/13 के अंतर्गत संतरी बाजार पुलिस थाने में दर्ज मामला सं0 07/02)।

- v. 10/07/2002 को एस0आई0 सुबीर अहमद ओ./सी. टी.के.जे. पुलिस थाना ने सूबेदार परेश देबबर्मा तथा टी.एस.आर. की 2 पलटनों के साथ अर्जुन ठाकुर पारा में विशेष अभियान चलाया। जब वे तलाशी तथा सैन्य अभियान की कार्रवाई कर रहे थे तब एन0एल0एफ0टी0 (बी0एम0) के सशस्त्र आतंकवादियों के एक दल ने उन पर अत्याधुनिक हथियारों से गोलीबारी करनी शुरू कर दी। टी.एस.आर. पार्टी ने गोलीबारी पर जवाबी कार्यवाही भी की जो एक घंटे तक जारी रही। गोलीबारी के बाद जंगल में तलाशी ली गई और जंगल में दो अनजान उग्रवादियों के शव पाए गए जिनसे वर्दी के साथ (i) चीनी राईफल (ii) दो मैग्जीन (iii) 7.62 एस.एल.आर. के 67 राउंड (iv) पिट्टू आदि बरामद किए गए। (आई0पी0सी0 की धारा 148/149/353/307, शस्त्र अधिनियम की धारा 25(क), यू0एल0ए0 एक्ट की धारा 13/10 के अंतर्गत तकरजला पुलिस थाना प्रकरण संख्या 07/02)।
- vi) 26/07/2002 को लगभग 1400 बजे तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग (ओ0एन0जी0सी0) के अधिकारी एस्काट टी0एस0आर0 और सी0आई0एस0एफ0 के सशस्त्र दल के साथ दिजेन्द्र पाड़ा ड्रिलिंग स्थल (तकरजला पुलिस थानांतर्गत) से अगरतला लौट रहे थे। जैसे ही वे अगरतला की ओर लगभग ½ कि०मी० पहुंचे उग्रवादी दल ने सड़क के दोनों ओर से गोलीबारी शुरू कर दी। इस हमले के कारण सशस्त्र एस्काट दल के एक वाहन चालक सहित टी0एस0आर0 के 4 और सी0आई0एस0एफ0 के 2 जवानों की मौके पर ही मृत्यु हो गई। टी0एस0आर0 और सी0आई0एस0एफ0 की जवाबी गोलीबारी में एक उग्रवादी भी घटनास्थल पर मारा गया। उग्रवादी टी0एस0आर0 और सी0आई0एस0एफ0 की एक-एक एस0एल0आर0 लूट कर ले गए। (आई0पी0सी0 की धारा 396/390, शस्त्र अधिनियम

की धारा 25(क)/27, यू0एल0एफ0टी0 अधिनियम की धारा 10/13 के अंतर्गत तकरजला पुलिस थाना प्रकरण संख्या 11/02)।

वर्ष 2003 में

- i. 26.01.2003 को लगभग 2000 बजे एन0एल0एफ0टी0 उग्रवादियों के एक दल ने ए0के0 श्रेणी के हथियारों से लैस होकर दुस्मंतापाड़ा गांव पर हमला किया और गोलीबारी शुरू कर दी जिसके परिणामस्वरूप 11 लोग घटनास्थल पर मारे गए और 6 अन्य घायल हो गए। (आई0पी0सी0 की धारा 148/149/326/307/302 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत जिरानिया पुलिस थाना प्रकरण संख्या 5/2003)।
- ii. 26.02.2003 को लगभग 1505 बजे जब विधान सभा मतदान के बाद मतदान दल बी0एस0एफ0 की एक प्लाटून के एस्कार्ट में लौट रहे थे तब वे संतरामपाड़ा में एन0एल0एफ0टी0 उग्रवादियों की भीषण गोलीबारी से घिर गए जिसके परिणामस्वरूप बी0एस0एफ0 के 5 जवान और एक सिविलियन चालक घटनास्थल पर ही मारे गए और 4 अन्य घायल हो गए। उग्रवादी उनसे 3 एस0एल0आर0, एक कार्बाइन, 7 एस0एल0आर0 मैग्जीन, एक कार्बाइन मैग्जीन, कुल 180 राउंड और एक मोटोरोला हेण्डसेट भी छीन ले गए (आई0पी0सी0 की धारा 148/149/302/307/326 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत जिरानिया पुलिस थाना प्रकरण संख्या 22/2003)।
- iii. 28.02.2003 को कुटिया बागान की ओर जाते हुए सी0आर0पी0एफ0, बोलबाड़ी की 32वीं बटालियन का एक दल उग्रवादियों की गोलीबारी से घिर गया जिसके परिणामस्वरूप सी0आर0पी0एफ0 के एक जवान की मौके पर ही मृत्यु हो गई और दो अन्य घायल हो गए। उग्रवादियों ने उनसे 30 राउण्ड गोलियों की मैग्जीन सहित एक ए0के0 47 राईफल छीन ली (आई0पी0सी0 की धारा 302/307/326/379/34 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत जिरानिया पुलिस थाना प्रकरण संख्या 25/2003)।

- iv. 13.03.2003 को लगभग 1045 बजे सी०आर०पी०एफ० एक्स-चक्रमाघाट रक्षण दल की 42वीं बटालियन जब राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 44 पर 45 मील तक पहुंचा तो अचानक एक आई०ई०डी० विस्फोट हुआ जिसके परिणामस्वरूप सी०आर०पी०एफ० के 3 जवान और एक गैर-सैनिक वाहन चालक घटनास्थल पर ही मारे गए और 4 अन्य घायल हो गये (आई०पी०सी० की धारा 148/149/302/435 तथा ई./एस. अधिनियम की धारा 3 के अंतर्गत तेलियामुरा पुलिस थाना प्रकरण संख्या 119/2003)।
- v. 27.3.03 को जिरानिया पुलिस थानान्तर्गत साधुपाड़ा में त्रिपुरा के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक का एस्कार्ट वाहन एन०एल०एफ०टी० (बी०/एम०) की भीषण गोलीबारी की चपेट में आ गया जिसके परिणामस्वरूप टी०एस०आर० की पहली बटालियन के घायल सुरक्षाकर्मी हेड कांस्टेबल रणजीत सिंह ने 31.3.03 को एस०एस०के०एम० अस्पताल में दम तोड़ दिया (आई०पी०सी० की धारा 148/149/326/353/427 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत जिरानिया पुलिस थाना प्रकरण संख्या 31/2003)।
- vi. 29.03.2003 को आर०पी०एफ० के कार्मिक एन०एल०एफ०टी० (बी०/एम०) के एक दल द्वारा घात लगाकर की गई भीषण गोलीबारी की चपेट में आ गए जिसके परिणामस्वरूप आर०पी०एस०एफ० के 5 कर्मचारी और 2 नागरिक मारे गए और 3 अन्य घायल हो गए उग्रवादी आर०पी०एस०एफ० के 5 शस्त्र भी लूट कर ले गए । (आई०पी०सी० की धारा 148/149/353/396/302 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत मनु पुलिस थाना प्रकरण संख्या 15/2003)।
- vii. एन०एल०एफ०टी० (बी०/एम०) उग्रवादियों के एक दल ने 8.4.03 को मेनोया कुमार पारा के मोहन डी/बरमा के घर पर धावा बोल दिया और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी जिसके फलस्वरूप दो व्यक्तियों की घटनास्थल पर मृत्यु हो गई और तीन अन्य घायल हो गए

(भारतीय दंड संहिता की धारा 302/326 और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत रेशमाबारी पुलिस थाने में दर्ज मामला सं० 5/03)।

- viii. 15.06.2003 को लेटियाचेरा पुलिस थाने के उप निरीक्षक जी०जे० रियांग ओ०/सी० एस.पी.ओ. तथा सी०आर०पी०एफ० की एक प्लाटून के साथ तुछींद्रेपारा में विशेष अभियान पर गए। उसी समय एन०एल०एफ०टी० (बी०/एम०) के 11/12 सशस्त्र उग्रवादियों ने इस दल पर दो हथगोले फेंके तथा गोलीबारी शुरू कर दी जिसके फलस्वरूप हेड कांस्टेबल इकबाल खान, कांस्टेबल पी०के० बिस्वास, कांस्टेबल एस० सेनापति गोली से घायल हो गए। अभियान दल ने उग्रवादियों का एक शव, 3 मैग्जीन सहित एक ए०के०एम० राईफल, 76 राउंड बराबद किए। बाद में शव की पहचान एन०एल०एफ०टी० (बी०एम०) के स्वयं-भू एरिया कमांडर चरनजोय रियांग के रूप में हुई (भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/353/307/326, शस्त्र अधिनियम की धारा 25(i)(क)/(ख)/27/28, ई०एस० अधिनियम की धारा 3/5 तथा यू०एल०ए० अधिनियम की धारा 10/13 के अंतर्गत लॉन्गथराई घाटी पुलिस थाने में दर्ज मामला सं० 7/2003)।
- ix. 16.07.2003 को 2000बजे ओ०जी० से सुसज्जित 718 सशस्त्र उग्रवादी मदाब मारक के नेतृत्व में केशब लाल हलाम के घर में घुसे और केशब लाल हलाम और लालमिंग सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी। मृतक केशब लाल हलाम एन०एल०एफ०टी० का उग्रवादी था जो बंगलादेश केम्प से बच गया था (भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/302/326 और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत काचुछेरा पुलिस थाने में दर्ज मामला सं० 13/2003)।
- x. 16.07.2003 को 2100बजे एन०एल०एफ०टी० के 8/10 सशस्त्र उग्रवादियों ने माधब मारक के नेतृत्व में, नेतेयल बुल हलाम तथा उसके बेटे रूलथे सेन हलाम की गोली मारकर

हत्या कर दी (भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/302 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत अम्बासा पुलिस थाने में दर्ज मामला सं० 36/2003)।

- xi. 22.07.2003 को 2220 बजे एन०एल०एफ०टी० के सशस्त्र उग्रवादियों ने नकुलजोय पारा के गजेन्द्र रियांग के घर धावा बोल दिया और उनके बेटे मेखनजोय रियांग के बारे में पूछताछ की जो कि बंगलादेश में एन०एल०एफ०टी० कैम्प से बचकर भाग निकला था। चूंकि मेखनजोय रियांग मौजूद था, इसलिए उग्रवादियों ने गजेन्द्र रियांग और श्रीमती जुमरूंग रियांग की गोली मारकर हत्या कर दी (भारतीय दंड संहिता की धारा 302/34 के अंतर्गत मनु पुलिस थाने में दर्ज मामला सं० 37/2003)।
- xii. 29.07.2003 को सुबह तीन अज्ञात उग्रवादी कालीचरणपारा के प्रबीर देबबर्मा के घर में घुसे और घर के लोगों पर अंधाधुंध गोली चलानी शुरू कर दी जिसके परिणामस्वरूप चार व्यक्तियों की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई। इस घटना का कारण बदला लेना था क्योंकि इस परिवार के दो सदस्यों, जो कि एन०एल०एफ०टी० के सदस्य थे, द्वारा सुरक्षा बलों के सामने समर्पण कर दिया है (भारतीय दंड संहिता की धारा 448/302/34 और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत चम्पाहवार पुलिस थाने में दर्ज मामला सं० 49/2003)।
- xiii. 31.07.2003 को 1930 बजे जब एक अभियान दल तकरजला के ब्रजेन्द्र देबरमा, सी०आई०, के नेतृत्व में अमताली की तरफ जा रहा था तो वह अचानक उग्रवादियों की गोलीबारी की चपेट में आ गया। अभियान दल ने भी जवाबी कार्रवाई में गोली चलाई, जब गोलीबारी रुकी तब अभियान दल ने क्षेत्र की तलाशी ली तथा एक एन०एल०एफ०टी० उग्रवादी के शव के साथ एक ए०के० 56 राईफल, दो मैग्जीन, 101 गोलियां तथा एक चायनीज ग्रिनेड बरामद किया (भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/333/307/124/ 120ख/153ख, शस्त्र अधिनियम की धारा 25(क) और यू०एल०ए० अधिनियम की धारा 10/13 के अंतर्गत तकरजला पुलिस थाने में दर्ज मामला सं० 25/2003)।

- xiv. 01.08.2003 को 2015 बजे एन०एल०एफ०टी० के उग्रवादी प्रकाश देबबर्मा के घर में घुसे और उनके छोटे भाई प्रांतोश देबबर्मा का अपहरण कर लिया । उन्होंने जमादारबारी के संजीत देबबर्मा तथा बापी देबबर्मा का भी अपहरण किया । तब से इन सभी का सुराग नहीं मिला । 28.10.2003 को जंगल से तीन अत्यधिक क्षत-विक्षत शव बरामद हुए । उनके कपड़ों से शवों की पहचान कर ली गई है । (भारतीय दंड संहिता की धारा 364/302 के अंतर्गत खोवाई पुलिस थाने में दर्ज मामला सं० 86/03) ।
- xv. 11.08.2003 की रात को असम राइफल्स की छठी बटालियन की एक टुकड़ी ने गंगहरिपाड़ा में विशेष अभियान चलाया और जब वे 12.08.2003 को 0715 बजे लौट रहे थे तो संदिग्ध एन०एल०एफ०टी० उग्रवादियों द्वारा की गई भीषण गोलीबारी से घिर गए जिसके परिणामस्वरूप असम राइफल्स के 3 जवानों की घटना स्थल पर ही मृत्यु हो गई (भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/333/307/124क और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अन्तर्गत तकारजला पुलिस थाने में दर्ज मामला सं० 28/2003) ।
- xvi. 25.08.2003 को 1015 बजे दक्षिण कुलाई गंताचेरा में उग्रवादियों तथा श्री प्रबीर मजूमदार, एस०डी०पी०ओ०, अम्बासा के नेतृत्व में विशेष अभियान दल के बीच गोलीबारी हुई । इस गोलीबारी में एक एन०एल०एफ०टी० (बी.एम.) उग्रवादी ललित देबबर्मा की घटना स्थल पर ही मृत्यु हो गई तथा उससे निम्नलिखित सामान बरामद किया गया (i) ए.के. 47 मैगजीन-2, (ii) ए.के.-47 राउंड-16, (iii) चाइनीज ग्रेनेड-1, (iv) कैमरा-1, (v) एन०एल०एफ०टी० पैड और अंशदान बहियां, (vi) 60,019/-रु० की नकदी । (भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/353/307, ई/एस अधिनियम की धारा 5 और यू०एल०ए० अधिनियम की धारा 10/13 के अंतर्गत अम्बासा पुलिस थाने में दर्ज मामला सं० 43/2003) ।
- (xvii) 13.09.2003 को लगभग 1925 बजे एन०एल०एफ०टी० के 10/12 उग्रवादी कुन्जा बहारीपाड़ा पुलिस थाना रनीरबाजार में आए तथा उन्होंने किसी मनोरंजन देबबर्मा को उनकी दुकान से बुलाया और गोली मारकर उसकी हत्या कर दी । तत्पश्चात यह ग्रुप दसरामबाड़ी गया तथा एक दुकान के सामने बिमल देबबर्मा (25) और धनीराम देबबर्मा (22) पर गोली चला दी । (भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/302 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत जिरानिया पुलिस थाने में दर्ज मामला सं० 86/2003) ।
- (xviii) 23.09.2003 को लगभग 0730 बजे हैड कांस्टेबल रुहित मियाह, प्रभारी, शेरमून टिल्ला, चौथी बटालियन, टी एस आर कैम्प ने एन.एल.एफ.टी. (एन बी) के 5 उग्रवादियों के साथ मिलकर 3 टी एस आर जवानों की हत्या की तथा 3 अन्य व्यक्तियों को घायल किया और उनसे एस एल आर-9, एल एम जी-1, कार्बाइन-1, ओल्ड बोल्ट एक्शन रायफल-2, वायरलैस-1, वी एच एफ सैट-2 लूट लिए । (भारतीय दंड संहिता की धारा 120 ख/396/307/326 के अंतर्गत कुमारघाट पुलिस थाने में दर्ज मामला सं० 48/2003) ।

- (xix) 29.09.2003 को लगभग 1645 बजे 6/7 सशस्त्र उग्रवादी दुर्नीचेरा में शिकायतकर्ता बिबिन्द्र देबबर्मा के घर में घुस गए तथा उनकी पौत्री गंधाबी कन्या देबबर्मा का अपहरण करने का प्रयास किया। विरोध करने पर उग्रवादियों ने गोली चलाई जिससे दीपाली देबबर्मा (35) और श्रीमती मिजुरानी देबबर्मा की घटना स्थल पर ही मृत्यु हो गई। उग्रवादी सुखदेव देबबर्मा के घर में घुस गए तथा उन्होंने सुबल चन्द्र देबबर्मा, सुरजालक्ष्मी देबबर्मा और बिकाष देबबर्मा पर गोली चला दी जिससे उनकी भी घटना स्थल पर मृत्यु हो गई और 3 अन्य व्यक्ति घायल हो गए (मारे गए कुल व्यक्ति 5)। (भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/302/326 एवं शस्त्र अधिनियम की धारा 27/28 के अंतर्गत कमालपुर पुलिस थाने में दर्ज मामला सं0 63/2003)।
- (xx) 18.10.2003 को सुबह नूतनबाजार पुलिस थाने के उप निरीक्षक जे0 रॉय ने सहायक कमांडेंट सूरजधर के नेतृत्व में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल कार्मिकों की 20वीं बटालियन की एक प्लाटून के साथ दिवरदमपाड़ा में विशेष अभियान चलाया। जब यह अभियान दल देबेन्द्रपाड़ा पहुंचा तो अचानक उग्रवादी संगठन ने गोलीबारी शुरू कर दी जिसके परिणामस्वरूप कांस्टेबल मुस्ताक अहमद कांधा की मृत्यु हो गई और 20 राउंड लोडिड मैगजीन वाली एक एस एल आर गुम हो गई। (भारतीय दंड संहिता की धारा 396/320/307 और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अन्तर्गत नूतनबाजार पुलिस थाने में दर्ज मामला सं0 23/2003)।
- (xxi) 01.11.2003 को 1600 बजे टीपू मोहन जमातिया के नेतृत्व में एन एल एफ टी (बी एम) के 5/6 उग्रवादी लैलाकबदी में पदम चरण मलसोम के घर आए और उन्होंने (i) चन्द्र मोहन मलसोन (31), (ii) भाग्यहारी (15), (iii) भाग्य सिंह (9), (iv) भाग्य बशी (4), (v) हरिपदा (1) का अपहरण किया और एक जंगल में ले जाकर उनकी हत्या कर दी। (भारतीय दंड संहिता की धारा 364/302 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत किल्ला पुलिस थाने में दर्ज मामला सं0 13/2003)।
16. उन्होंने ए टी टी एफ द्वारा किए गए कुछ जघन्य अपराधों का भी उल्लेख किया है जो निम्न प्रकार हैं:

i. वर्ष 2002 में

25.09.2002 को लगभग 0200 बजे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 32वीं बटालियन की एक प्लाटून इस सूचना पर इंतजार में खड़ी थी कि दुर्दान्त स्वयंभू उग्रवादी मेजर जगदीश डी/बर्मा उर्फ जेस्टर सड़क पर आ सकता है। लगभग 16.15 बजे उन्होंने चरधरिया की तरफ से एक मारुति वैन तथा एक मोटर बाइक को आते देखा। मोटर बाइक पर सवार व्यक्ति की पहचान जगदीश देबबर्मा के रूप में की गई तथा उसे पकड़ लिया गया और उससे 15 राउंड वाली 9 एम एम की एक पिस्तौल और 66,035/-रु0 की नकदी बरामद की गई। तत्पश्चात, यह पता चला कि त्रिपुरा सरकार ने उस पर 1.00 लाख रु0 के नकद पुरस्कार की घोषणा की

हुई थी । (भारतीय दंड संहिता की धारा 120 (ख)/121/1224(क) और शस्त्र अधिनियम की धारा 10/13 के अंतर्गत जिरानिया पुलिस थाने में दर्ज मामला सं० 89/02)।

ii. दिनांक 23.12.2002 को 0130 बजे पिनाकी सामंता, सहायक कमांडेंट टी एस आर बैरागी पाड़ा सिघाई पुलिस थाने में इंतजार कर रहे थे । सुबह-सुबह 07.15 बजे कुछ उग्रवादियों को उनकी तरफ आते देखा गया जिनके पास ए.के. राईफल जैसे परिष्कृत हथियार थे । जब दल को ललकाया गया तो उन्होंने गोलीबारी करनी शुरू कर दी जिसके फलस्वरूप, एक बंदूकधारी बिनय रॉय को गोली लगी और बाद में अस्पताल ले जाते समय रास्ते में उनकी मृत्यु हो गई । (शस्त्र अधिनियम की धारा 148/149/307/302, 27 तथा यू एल ए अधिनियम की धारा 13 के अंतर्गत (एस डी) थाना में दर्ज मामला सं० 90/02)।

वर्ष 2003 में

i. दिनांक 07.03.2003 को लगभग 2345 बजे जब असम राइफल्स के कार्मिक विशेष अभियानों के लिए गुमसिंहबरी पहुंचे तो ए टी टी एफ के उग्रवादियों ने असम राइफल्स के कार्मिकों पर गोलियां चलाई जिसके जवाब में उन्होंने भी गोलियां चलाई। खोजबीन के दौरान सुरक्षा बल ने श्यामल तांती का शव बरामद किया जो एक सूचीबद्ध ए टी टी एफ उग्रवादी था और उससे (i) इलेक्ट्रिक डेटोनेटर-13, (ii) ए के-47 लाइव राउंड 2 (iii) ए के 47 एम्पटी राउंड-5, (iv) .12 बोर सी/एम बंदूक-1 (v) लचीली तार-5 मीटर बरामद की । (भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/307, शस्त्र अधिनियम की धारा 25 (क) तथा ई/एस अधिनियम की धारा 3 के तहत थाना चंपाहावर में दर्ज मामला सं० 49/2003)।

ii. दिनांक 6.5.2003 को सुबह जब असम राइफल्स के कार्मिकों ने रतनपुर मार्किट में विशेष अभियान चलाए तो उन्होंने परिमल देबबर्मा को चुनौती दी । उसने सुरक्षा बलों पर गोलीबारी करके भागने की कोशिश की । असम राइफल्स के कार्मिकों ने भी आत्मरक्षा में गोलियां चलाई और उसे पकड़ लिया । उससे एक .22 रिवाल्वर, एक मैगजीन तथा 3 लाइव राउंड भी बरामद किए गए । परिमल देबबर्मा की अस्पताल ले जाते हुए रास्ते में ही मृत्यु हो गई । (भारतीय दंड संहिता की धारा 307 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27/25 (क) के अंतर्गत थाना खोवाई में दर्ज मामला सं० 76/2003)।

iii. दिनांक 5.7.2003 को 0535 बजे केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 10 कार्मिक दो वाहनों में कल्याणपुर से बाड़ामैदान आ रहे थे । जब वाहन बालूकाटा पहुंचे तो पहले वाहन में विस्फोट हो गया और इस पर उग्रवादियों द्वारा गोलियां चलाई गई । इसके फलस्वरूप के०रि०पु०बल के 3 जवानों को चोटें आई । (भारतीय दंड संहिता की धारा

326/307 तथा ई.एस. अधिनियम की धारा 3/5 के अंतर्गत थाना कल्याणपुर में दर्ज मामला सं० 30/2003)।

iv. दिनांक 7.5.03 को 2050 बजे ए टी टी एफ के 10/12 सशस्त्र उग्रवादियों ने थाना कल्याणपुर के अधीन मोहन चेरा मार्केट पर धावा बोल दिया और अंधाधुंध गोलियां चलाई। इसके फलस्वरूप, 9 व्यक्ति मौके पर ही मारे गए और 3 अन्य घायल हो गए। (भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/326/302 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत थाना तेलियामूरा में दर्ज मामला सं० 70/2003)।

v. दिनांक 6.5.03 की रात परिष्कृत हथियार लिए हुए ए टी टी एफ के एक उग्रवादी दल ने गांव सिमना कॉलोनी पर धावा बोल दिया और अंधाधुंध गोलियां चलाई। उन्होंने घरों को भी आग लगा दी जिसके फलस्वरूप 19 व्यक्ति मारे गए, छह व्यक्ति घायल हो गए और काफी संख्या में पशु मारे गए (शस्त्र अधिनियम की धारा 148/149/326/302/436 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत थाना सिघाई में दर्ज मामला सं० 46/03)।

17. उनके अनुसार, ए टी टी एफ तथा एन एल एफ टी द्वारा वर्ष 2002-03 के दौरान त्रिपुरा में किए गए अपराध इस प्रकार हैं :

वर्ष	की गई वारदातें		मारे गए नागरिकों की संख्या		मारे गए सुरक्षा बल कार्मिकों की संख्या		अपहृत व्यक्तियों की संख्या	
	एन एल एफ टी	ए टी टी एफ	एन एल एफ टी	ए टी टी एफ	एन एल एफ टी	ए टी टी एफ	एन एल एफ टी	ए टी टी एफ
जनवरी, 2002- अक्टूबर, 2003	365	111	183	132	67	13	257	46

18. उन्होंने अपने शपथ पत्र के अंत में उल्लेख किया है कि शपथ-पत्र में दिए गए तथ्यों के आलोक, मैं भारत सरकार द्वारा विधि विरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम की धारा 3 की उप धारा 1 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए भारत के असाधारण राजपत्र में प्रकाशित दिनांक 3 अक्टूबर, 2003 की अधिसूचना सं० का.आ. 1164 (अ), जिसमें नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा (एन एल एफ टी) तथा ऑल त्रिपुरा टाईगर फोर्स (ए टी टी एफ) और उनके गुटों को विधि विरुद्ध संगम घोषित किया गया है, के जारी किए जाने के पर्याप्त आधार हैं और यह न्यायोचित तथा कानून के अनुसरण में है और वे प्रार्थना करते हैं कि इन परिस्थितियों में, माननीय अधिकरण भारत सरकार द्वारा उक्त अधिसूचना में की गई घोषणा की पुष्टि करने की कृपा करें।

19. श्री आर०आर० झा, निदेशक ने अपने बयान में कहा है कि विभिन्न प्राधिकारियों/एजेंसियों की रिपोर्टें, जिनका उल्लेख सारांश में किया गया है, इस मंत्रालय में उपलब्ध हैं और उन्हें अवलोकन के लिए अधिकरण में उपलब्ध कराया जा सकता है। बाद में इन रिपोर्टों को अवलोकन के लिए अधिकरण में प्रस्तुत कर दिया गया था तथा अवलोकन के बाद इन्हें सीलबंद कवर में वापस कर दिया गया।
20. मैंने सुना है कि विद्वान अपर महा सॉलीसिटर श्री के०के० सूद भारत संघ का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और श्री गोपाल सिंह, अधिवक्ता, त्रिपुरा राज्य का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।
21. जैसा कि ऊपर नोट किया गया है, वर्तमान संदर्भित कार्यवाही में की जा रही जांच एक-तरफा है क्योंकि उपर्युक्त उल्लिखित संगमों की ओर से किसी ने भी कोई कारण नहीं बताया है कि इन संगमों को विधिविरुद्ध क्यों न घोषित किया जाए और, इसलिए स्पष्ट शब्दों में उपलब्ध कथनों और लगाए गए आरोपों तथा लिखित सामग्री, जिसका खंडन नहीं किया गया है, को देखते हुए अधिकरण तुरंत यह फैसला ले सकता है कि उक्त संगमों को विधिविरुद्ध न घोषित करने के लिए कोई कारण नहीं बताया गया है। तथापि, अपने आप को संतुष्ट करने की दृष्टि से अधिकरण ने रिकार्ड में प्रस्तुत की गई पूरी सामग्री की पूर्ण रूप से और विस्तार से जांच की है।
22. उपर्युक्त गवाहों ने अपने हलफनामे से पूर्ण सहमति व्यक्त की है और कई घटनाओं का पुनः उल्लेख किया है। विशेष रूप से उन्होंने उन कथनों और आरोपों की पुष्टि की है जिन्हें उन्होंने साक्ष्य के रूप में अपने शपथ पत्र में बताया था। उनके शपथ पत्र में निम्नलिखित घटनाओं/संगमों की गतिविधियां प्रमाणित की गई हैं।
23. एन एल एफ टी और ए टी टी एफ निम्नलिखित वारदातों में लिप्त रहे हैं जो उपरोक्त गवाहों द्वारा प्रस्तुत किए गए हलफनामों से स्पष्ट हैं जिन्हें उन्होंने अभिकरण के सम्मुख दर्ज किए गए संदर्भ और अपने बयानों के समर्थन में प्रस्तुत किया था :
- (i) 14 अगस्त, 2003 को लगभग 2100 बजे ए टी टी एफ के उग्रवादी समूह ने बरलुंगा गांव पर हमला किया। वे बंदूकों और अन्य हथियारों से लैस थे। उन्होंने गांव वालों पर हमला किया और 6 बच्चों सहित 16 लोगों की हत्या कर दी तथा 6 अन्यो को घायल कर दिया। यह हमला 10 से 15 मिनट तक चला। इस हमले से पहले ए टी टी एफ के संदिग्ध लोगों ने दो लोगों का अपहरण किया और एक व्यक्ति की हत्या कर दी।
 - (ii) दिनांक 14 अगस्त, 2003 को ए टी टी एफ और एन एल एफ टी के आतंकवादियों ने उसी दिन कई गांवों पर हमला किया। मेरे गांव पर भी लगभग 9.00 बजे रात्रि को हमला किया गया। उन्होंने अंधाधुंध गोलियां चलाई जिससे 14 लोग मारे गए और 3

लोग घायल हो गए। मेरी पत्नी सुप्रवा देबनाथ भी उस गोलीबारी में मारी गई। उसी दिन और उसी समय पर एक अन्य दल ने बरलुंगा किशनपुर गांव पर हमला किया और 16 लोगों की हत्या कर दी। उन्होंने सेना की वर्दी पहन रखी थी।

- (iii) दिनांक 6 मई, 2003 को रात्रि में 11.30 बजे ए टी टी एफ और एन एल एफ टी के उग्रवादियों ने मेरे गांव पर हमला किया और अंधाधुंध गोलियां बरसाईं जिसके फलस्वरूप मेरी पत्नी, दो पुत्र, माता जी, भाई और मेरे गांव के 16 अन्य लोग मारे गए। मुझे, मेरी भतीजी और दो अन्य लोगों को गोली लगी जिससे हम घायल हो गए। उक्त हमले में घायल होने से मुझे मेरा बायां हाथ खोना पड़ा। उग्रवादियों ने घरों और मृतकों को जला दिया। वे 70-80 लोग थे और उनके पास अत्याधुनिक हथियार थे।
- (iv) दिनांक 25 फरवरी, 2003 को सांय लगभग 5/6 बजे अत्याधुनिक हथियारों से लैस एन एल एफ टी के 7 या 8 उग्रवादियों ने मेरे घर से ही मेरा अपहरण कर लिया और मुझे चेतावनी दी कि मैं सी पी आई (एम) के पक्ष में चुनाव कार्य न करूं। इसके बाद पुलिस ने मुझे ढूंढ निकाला। उनकी कैद में रहते हुए मुझ पर लाठियों से प्रहार किये गए। इसके बाद मई, 2003 में किसी समय एन एल एफ टी का एक दल फिर हमारे गांव आया और एक अवयस्क बच्चे की हत्या कर दी। अप्रैल, 2003 में किसी समय एन एल एफ टी के उग्रवादी दल ने मेरे गांव के 6 या सात वर्ष के 5 अवयस्क बालकों का अपहरण कर लिया और फिरौती के रूप में 2 लाख रुपये देने पर ही उन्हें छोड़ा गया। दिनांक 30 सितम्बर, 2003 को सांय लगभग 7.30 बजे एन एल एफ टी के उग्रवादी दल ने रसराम बाड़ी और कुंजबिहारी पाड़ा गांवों पर हमला किया और गोली मार कर 3 लोगों की हत्या कर दी।
- (v) दिनांक 26 जनवरी, 2003 को रात में लगभग 8.00 बजे विश्वमोहन देबबर्मा की अगुवाई में एन एल एफ टी के 10 से 15 उग्रवादियों ने दुसमंता नारायण पाड़ा गांव पर हमला कर दिया और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी जिससे 11 व्यक्ति मारे गए और 5 घायल हो गए।
- (vi) दिनांक 13 अगस्त, 2003 को रात में लगभग 7.30 बजे ए टी टी एफ के 20 से 30 सशस्त्र उग्रवादियों ने हमारे गांव पर हमला किया और गांव के लोगों पर अंधाधुंध गोलियां चलाना शुरू कर दिया जिससे तीन व्यक्ति मारे गए और चार घायल हो गए। पुलिस के वहां पहुंचने पर ही हम बच पाए। दो साल पहले एक व्यक्ति मानिक देव जंगल में अपने पशुओं को चराने ले गया था वहां ए टी टी एफ के लोगों ने उसकी हत्या कर दी। उग्रवादी समूह अभी भी गांव के लोगों से लगातार कर वसूली के नाम पर जबरन धन ऐंठ रहे हैं और अपहृत व्यक्तियों के लिए फिरौती के रूप में धन की मांग कर रहे हैं।

(vii) 29 अगस्त, 2003 को घात लगा कर किए गए हमले में उग्रवादी गुट (ए टी टी एफ) का एक सदस्य घायल हो गया और बाद में पता चला कि उसकी मृत्यु हो गई । उग्रवादियों की संख्या लगभग 18 से 19 थी । वे अपने पीछे एक ए.के. 56 राइफल छोड़ गए । इस घटना में सुरक्षा बलों का कोई सदस्य हताहत नहीं हुआ ।

(viii) वर्ष 2003 में, अकेले ए. टी. टी. एफ. ने लगभग 40 व्यक्तियों की हत्या की और 29 लोगों का अपहरण किया । मेरे शपथ पत्र में इन संगठनों की व्यापक गतिविधियों का भी उल्लेख किया गया है ।

(ix) उदाहरण के तौर पर राष्ट्रीय दिवस की पूर्व संध्या पर 14.8.2003 को उन्होंने कल्याणपुर थाने और तेलियामूरा थाने के अंतर्गत जानबूझकर निर्दयता से 31 गैर-जनजातीय सिविलियन लोगों की हत्या कर दी जिसमें बेगुनाह बच्चे और महिलाएं शामिल हैं । स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर उन्होंने त्रिपुरा के एन एल एफ टी, असम के उल्फा और एन डी एफ बी आदि जैसे अवैध संगठनों के साथ बहिष्कार का आह्वान किया था । उन्होंने इन दोनों अवसरों पर काले झंडे प्रदर्शित किए ।

उक्त घटनाओं के अलावा एन एल एफ टी और ए टी टी एफ अन्य गतिविधियों में भी संलिप्त रहा है, जिनका ब्यौरा निम्नलिखित है :

(i) यह कि स्रोत से प्राप्त रिपोर्ट से यह पता चला है कि एन एल एफ टी और ए टी टी एफ/टी पी डी एफ/आर पी ए अपने उद्देश्य और लक्ष्य के तौर पर त्रिपुरा को भारत संघ से अलग किए जाने का प्रयास जारी रखे हुए है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने त्रिपुरा में अलगाववादी, हिंसक, क्रांतिकारी और आतंकवादी गतिविधियां जारी रखी हुई हैं । एन एल एफ टी और ए टी टी एफ का संविधान उनके लक्ष्य के रूप में भारत संघ से अलग होने की वकालत करता है । उन्होंने नियमित सेना की भांति पद सोपान पद्धति पर एक अलग सशस्त्र विंग स्थापित कर रखा है । इस विंग के पास, बड़ी मात्रा में, विदेशों से इकट्ठे किए हुए आधुनिक हथियार और विस्फोटक उपलब्ध हैं ।

(ii) यह कि विभिन्न माध्यमों से एकत्रित विभिन्न रिपोर्टों से स्पष्ट होता है कि स्थापना से लेकर अब तक एन.एल.एफ.टी. और ए.टी.टी.एफ./टी.पी.डी.एफ./आर.पी.ए. अनेकों घटनाओं के लिए जिम्मेदार रहे हैं जिनमें त्रिपुरा में सामूहिक हत्याएं, सुरक्षा कर्मियों की हत्या, अपहरण और धन ऐंठने आदि की घटनाएं शामिल हैं ।

- (iii) यह कि एन.एल.एफ.टी. और ए.टी. टी.एफ./टी.पी.डी.एफ./आर.पी.ए. टैक्स नोटिसें भेजकर राज्य के ग्रामीण लोगों, सरकारी कर्मचारियों और व्यापारियों आदि से धन ऐंठ रहे हैं ।
- (iv) यह कि ए.टी.टी.एफ./टी.पी.डी.एफ./आर.पी.ए. राज्य के लोगों से यह आग्रह करते रहे हैं कि वे स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस का बहिष्कार करें । यह बात उनके मुख्यपत्र 'चोबा' में कई बार प्रकाशित की जा चुकी है ।
- (v) यह कि विभिन्न स्रोतों से प्राप्त रिपोर्टों और एन.एल.एफ.टी. एवं ए.टी.टी.एफ. की जांच रिपोर्टों से यह पूरी तरह स्पष्ट है कि त्रिपुरा को भारत संघ से मुक्त कराकर एक स्वतंत्र "बोरोक लैंड त्रिपुरा" की स्थापना करने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ए टी टी एफ/टी पी डी एफ/आर पी ए हिंसक गतिविधियों में संलिप्त रहे हैं जिससे देश की संप्रभुता को खतरा पैदा हो रहा है, लोक व्यवस्था भंग हो रही है, राज्य का विकास अवरुद्ध हो रहा है और दहशत का वातावरण पैदा हो रहा है ।
- (vi) राष्ट्र के विरुद्ध लड़ाई जारी रखे हुए है ।
- (vii) सिविलियन लोगों से जबरदस्ती धन एकत्रित किया जा रहा है ।
- (viii) बेकसूर सिविलियनों, सरकारी सेवकों और सुरक्षाकर्मियों की हत्या की जा रही है जिससे राज्य के समुदायों के बीच जातीय तनाव पैदा हो रहा है ।
- (ix) दोनों संगठनों के सदस्य विदेशी समुदायों की सहायता से अपनी गतिविधियां चला रहे हैं । यह स्पष्ट है कि उन्होंने बांग्लादेश के भीतर प्रशिक्षण शिविर स्थापित किए हैं जहां से वे ऐसी गतिविधियां चला रहे हैं ।
- (x) उनका अपना तथाकथित संविधान है जिससे यह स्पष्ट होता है कि वे भारतीय संप्रभुता से अलग देश चाहते हैं । वे अवैध तरीकों से विदेशों से बड़ी मात्रा में आधुनिक हथियार एवं गोला बारूद प्राप्त कर रहे हैं और राज्य में विध्वंसक एवं हिंसक गतिविधियां चला रहे हैं ।
- (xi) उन्होंने पूर्वोत्तर राज्यों के अन्य भूमिगत उग्रवादी संगठनों और विदेशी तंत्रों के साथ संपर्क स्थापित किया हुआ है और वे उनसे प्रशिक्षण एवं वित्तीय सहायता भी प्राप्त कर रहे हैं ।

- (xii) फिरौती के लिए महिलाओं, बच्चों, सरकारी कर्मचारियों, सुरक्षा बलों के कार्मिकों सहित बेकसूर लोगों का अपहरण करते हैं। वे राज्य की प्रभुसत्ता को बनाए रखने के लिए सरकारी ड्यूटी पर तैनात सुरक्षा बल कार्मिकों की हत्या करके तथा उनके हथियार छीन कर उन पर हमला कर रहे हैं।
- (xiii) 26.01.2003 को लगभग 2000 बजे एन एल एफ़ टी उग्रवादियों के एक दल ने जिरानिया प्राइवेट सेक्रेटरी के अधीन आने वाले ग्राम दुश्मंत पाड़ा पर ए.के. श्रृंखला के हथियारों के साथ घावा बोल दिया तथा अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी जिसके फलस्वरूप 11 व्यक्तियों की मौके पर ही मौत हो गई। इसका संबंध भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/326/307/302 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत जिराना थाने में दर्ज मामला सं० 5/2003 से है।
- (xiv) 26.2.2003 को लगभग 1505 बजे जब चुनाव पार्टियां सीमा सुरक्षा बल की एक बटालियन की सुरक्षा में वापिस लौट रही थी तब वे शंतराम पाड़ा में एन.एल.एफ.टी. के उग्रवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी की चपेट में आ गई जिसके फलस्वरूप सीमा सुरक्षा बल के 5 कार्मिक तथा 1 सिविल ड्राइवर की मौके पर ही मौत हो गई तथा चार अन्य घायल हो गए। वे 3 एस.एल.आर., 1 कारबाइन, 7 एल.एस. आर. मैगजीन तथा 1 कारबाइन मैगजीन एवं 180 आर.डी.एस. और एक मोटोरोला का हैंडसेट भी लूट कर ले गए। इसका संबंध भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/2003/307/326 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत जिरानिया थाने में दर्ज मामला सं० 22/2003 से है।
- (xv) 14.08.03 की रात्रि लगभग 2110 बजे ए.टी.टी.एफ. के उग्रवादियों के एक दल ने थाना कल्याणपुर के अधीन आने वाले ग्राम कमल नगर को घेर लिया तथा गांव के घरों पर अंधाधुंध ढंग से गोलीबारी करनी शुरू कर दी जिसके फलस्वरूप 14 व्यक्तियों की मौके पर ही मृत्यु हो गई तथा 4 घायल हो गए। इसका संबंध भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/302/326 के अंतर्गत कल्याणपुर थाने में दर्ज मामला सं० 38/2003 से है।
- (xvi) 14.8.03 की रात्रि को ए.टी.टी.एफ. के आतंकवादियों के एक दल ने तेलियामुरा पुलिस थाने के अंतर्गत आने वाले गांव बारलुंगा को घेर लिया तथा गैर-जनजाति के लोगों के घरों पर अंधाधुंध गोलीबारी की जिसके परिणामस्वरूप 15 लोगों की मौके पर ही मृत्यु हो गई तथा 7 अन्य घायल हो गए। इसका संबंध भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/302/326 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत तेलियामुरा पुलिस थाने में दर्ज मामला सं० 99/2003 से है।

- (xvii) वर्ष 2003 में मानव हत्या, अपहरण, आम लोगों से जबरन धन वसूली जैसी अनेक घटनाएं घटी जिनको एन एल एफ टी तथा एंटी टी एफ द्वारा अंजाम दिया गया था। 26 जनवरी, 2003 को लगभग 1545 बजे एन एल एफ टी के 19/20 उग्रवादियों के एक दल ने जिरानिया पुलिस थाने के तहत आने वाले गांव दुसमंत नारायण पाड़ा पर धावा बोल दिया तथा गांव वालों पर अंधाधुंध गोलीबारी की जिसके फलस्वरूप 11 बेकसूर ग्रामीणों की मौत हो गई तथा अन्य 6 को गोली लगी। इसका संबंध भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/302/326 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत जिरानिया थाने में दर्ज मामला सं० 5/03 से है।
- (xviii) 6.5.2003 की रात्रि को ए.टी.टी.एफ. के 20/25 उग्रवादियों के एक दल ने सिमना कालोनी पर अत्याधुनिक हथियारों से हमला बोल दिया तथा 17 लोगों को मौत के घाट उतार दिया एवं 6 अन्य लोगों को ए टी टी एफ आतंकवादियों की अंधाधुंध गोलीबारी के कारण गोली लगी। उन्होंने गांव को भी आग लगा दी तथा 4 घर जल कर राख हो गए। पशु एवं बकरियां भी आग में जल गईं। 6 घायल लोगों में से 2 की जी.बी. अस्पताल में मृत्यु हो गई। इसका संबंध भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/302/326/436 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत थाना एस. डी.आई. में दर्ज मामला सं० 46/03 से है।
- (xix) 19.5.03 को कल्याणपुर लोक निर्माण विभाग के एस.डी.ओ. सुरंजन दास तथा जिवन पॉल और सुरजीत भट्टाचार्य (दोनों ठेकेदार) सड़क कार्य के पर्यवेक्षण हेतु मुकाम्बरी गए। लगभग 1300 बजे एन. एल० एफ० टी० के 9/10 उग्रवादियों ने जो ओ/सी की वर्दी में थे, बंदूक की नोक पर उनका अपहरण कर लिया। बाद में फिरौती देने पर उन्हें मुक्त कर दिया गया।
- (xx) 22.12.03 को खोवाई को जाने वाले डेबरा पारखोलोंग मार्ग पर श्री टी०बी० रॉय, ओ. सी. सिद्धार्थ पी.एस. के साथ पारखोलोंग जा रहे थे। लगभग 1530 बजे पारखोलोंग से एस डी आई के रास्ते में डेबरापारा पर ए टी टी एफ के अज्ञात सशस्त्र उग्रवादियों ने ब्रज जमातिया, सी/451 नामक एक सुरक्षाकर्मी पर हमला किया जो पहाड़ी क्षेत्र की जांच के लिए पहाड़ी पर चढ़ने वाला था और इसके परिणामस्वरूप डी. ए. आर. के उक्त कांस्टेबल ब्रज जमातिया की चोट लगने से मौके पर ही मृत्यु हो गई। इसका संबंध भारतीय दंड संहिता की धारा 148/149/353/307/120 (ख)/302 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के अंतर्गत थाना एस.डी.आई. में दर्ज मामला सं० 87/03 से है।

(xxi) वर्ष 2003 के दौरान पश्चिम त्रिपुरा जिले के अधीन पश्चिमी त्रिपुरा पुलिस/जिला कार्य बल/टी एस आर/असम राईफल/सी आर पी एस ने ए टी टी एफ/एन एल एफ टी उग्रवादियों के साथ हुई मुठभेड़ के बाद उनसे निम्नलिखित शस्त्र और गोला बारूद बरामद किए :

1. ए.के.-56 राईफल-1
2. ए.के.- 66 राईफल-2
3. देशी बंदूक-5
4. हथगोला-1
5. चीनी हथगोले-16, गोला बारूद-366, 3.5 कि०ग्रा० आई०ई०डी० पावडर
6. 18 प्रस्फोटक
7. 10 राउंड वाली 9 एम.एम. पिस्तौल-1
8. कामचलाऊ 9 एम एम पिस्तौल-1
9. कामचलाऊ सी/एम रिवाल्वर-3
10. 38 रोगर रिवाल्वर-4
11. 22 पिस्तौल
12. चीनी पिस्तौल-1
13. 303 बेओनेट-1
14. एस एल आर राउंड्स 358, जी-3 राईफल-2

(xxii) श्री टी०बी० रॉय के कार्यकाल के दौरान, उन्होंने एन एल एफ टी और ए टी टी एफ दोनों गुटों के उग्रवादियों के खिलाफ अनेक अभियानों का नेतृत्व किया है और यह समझ लिया कि ए टी टी एफ/एन एल एफ टी के सदस्य (जैसा भी मामला हो) अपने-अपने गुटों के साथ विध्वंसक गतिविधियों में शामिल हैं और उनके लिए जिम्मेवार हैं। भारतीय संघ से त्रिपुरा को 'आजाद' कराकर एक स्वतंत्र 'बोरोक लैंड त्रिपुरा' की स्थापना करने के अपने घोषित लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से एन०एल०एफ०टी० तथा ए०टी०टी०एफ० और उनके गुट अलगाववादी और विध्वंसक गतिविधियों में लिप्त हैं जो देश की संप्रभुसत्ता के लिए खतरा है, लोक व्यवस्था और राज्य के विकास में बाधक है और लोगों में आतंक पैदा करते हैं। उन्होंने लैंड माईन्स, राकेट लांचर, आर.पी.जी. आदि जैसे घातक हथियार प्राप्त कर लिए हैं जिनका इस्तेमाल वे राष्ट्रीय एकता की स्थापना कर रहे सुरक्षा बलों के खिलाफ कर रहे हैं।

(xxiii) पिछले गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस के दौरान, ए०टी०टी०एफ० और एन०एल०एफ०टी० दोनों ने इन समारोहों का बहिष्कार करने का आह्वान किया और

त्रिपुरा के अदरूनी भागों में काले झड़े दिखाए ताकि जनता को इन अवसरों पर आयोजित समारोहों में भाग लेने से रोका जा सके ।

24. त्रिपुरा सरकार की ओर से हाजिर होने वाले सभी गवाहों ने श्री आर०सी० पोद्दार के शपथ पत्र की विषय-वस्तु की पुष्टि की । गवाहों ने प्रतिबंधित संगठनों द्वारा जारी किए गए धन ऐंठने संबंधी नोटिसों तथा इन संगठनों द्वारा किए गए अपराधों के संबंध में दर्ज कराई गई प्रथम सूचना रिपोर्टों को लिखित रूप से साबित किया है । उनके द्वारा यह भी बताया गया कि दोनों संगठन त्रिपुरा के कई हिस्सों में विध्वंसक और अलगाववादी गतिविधियों में लिप्त थे, वे सीमा पार, बंगलादेश से प्रचालन कर रहे थे और इसलिए पुलिस द्वारा इनको रोकना भी बहुत मुश्किल था । यह बताया गया कि इन संगठनों की कार्य प्रणाली में लोगों को हथियारों से डराना तथा त्रिपुरा के समुदायों को भयभीत करना है ताकि वे त्रिपुरा के कतिपय क्षेत्रों को छोड़कर चले जायें । वे निर्दोष लोगों और सरकारी कर्मचारियों की हत्या करने और फिरौती के लिए उनके अपहरण में भी लिप्त थे जिसके फलस्वरूप विकासात्मक गतिविधियों में बाधा आ रही थी । गवाहों द्वारा उक्त प्रतिबंधित संगठनों का संविधान भी साबित किया गया ।

25. आल त्रिपुरा टाईगर फोर्स के संविधान का अवलोकन करने से प्रतीत होता है कि इस बल का मुख्य उद्देश्य पूर्वोत्तर के सात राज्यों नामशः त्रिपुरा, असम, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश को मिलाकर एक अलग देश का निर्माण करना है और इसके लिए बल को सभी आंदोलनों को समर्थन देना था तथा इस उद्देश्य के लिए अपने स्वयं के बल का प्रयोग करना था । नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा का मुख्य उद्देश्य सशस्त्र संघर्ष करके त्रिपुरा से साम्राज्यवाद, पूंजीवाद और नव-उपनिवेशवाद को समाप्त करना था ताकि तवीपरा की बोर्क सभ्यता का अलग और स्वतंत्र अस्तित्व हो सके, बोरोकलेड तवीपरा को मुक्त कराकर पूर्ण स्वतंत्रता दिलाना तथा लोक गणतंत्र को बदल देना था ताकि राज्य में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की स्थापना की जा सके । अपनी स्वयं की स्वतंत्र सरकार की स्थापना करने तथा भारत की पूंजीवादी सरकार को उखाड़ फेंकने के अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उनके संविधान में प्रावधान किया गया है कि इसका अपना स्वयं का स्वतंत्र झंडा, राजभाषा और संप्रतीक होगा । उनके संविधान में प्रावधान है कि इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वे बल का प्रयोग भी कर सकते हैं । सरकार ने नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा द्वारा पंचायत के लोगों और व्यक्तियों से धन ऐंठने के लिए राजस्व और कर के नाम पर जारी की गई लिखित रसीदें भी रिकार्ड में रखी हुई हैं ।

26. नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा तथा ऑल त्रिपुरा टाईगर फोर्स के संविधान, अंशदान नोटिसों और धन ऐंठने संबंधी रसीदों सहित रिकार्ड में रखे गए गवाहों के बयानों तथा शपथ पत्रों/दस्तावेजों के अध्ययन के रिकार्ड से यह स्पष्ट है कि दोनों नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा और आल त्रिपुरा टाईगर फोर्स दोनों का उद्देश्य बोरोकलेड त्रिपुरा का स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करना तथा पूर्वोत्तर के सात राज्यों को मिलाकर एक अलग देश का निर्माण करना है । इन संगठनों के कार्यकलापों के मुख्य क्षेत्र में पश्चिम त्रिपुरा, धलाई, उत्तर और दक्षिण त्रिपुरा शामिल है । इन संगठनों के पास अवैध स्रोतों से प्राप्त अत्याधुनिक आग्नेयास्त्र हैं । वे भारत से अलगाववादी नीति का सतत अनुसरण कर रहे हैं, वे भारत की संप्रभुता और अखंडता के लिए प्रतिकूल क्रियाकलापों में रत हैं और

अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सशस्त्र क्रियाकलापों द्वारा हिंसा एवं आतंक फैलाने में लगे हैं। वे व्यापारियों, वणिकों तथा सरकारी कर्मचारियों तक से अवैध रूप से जबरन धन ऐंठने और कर वसूली भी करते हैं और उनके पूर्वोत्तर के अन्य विद्रोही समूहों के साथ संबंध हैं तथा उनसे उन्हें सहायता मिलती है। उनके पड़ोसी बंगलादेश में शरणगाह, छिपने के सुरक्षित स्थल, प्रशिक्षण शिविर हैं तथा उन्हें विभिन्न सुरक्षा बलों से छीनकर या अन्य छद्म सरणियों से भारी मात्रा में अत्याधुनिक शस्त्र और गोला बारूद प्राप्त होता है। ये संगठन नागरिकों, सशस्त्र सैनिकों की हत्या करने, लूटने, बलात धन ऐंठने तथा अन्य आपराधिक कृत्यों में लगे हैं और इस प्रकार कानून रहित वातावरण सृजित कर रहे हैं।

27. अधिनियम की धारा 2 (छ) में विधि विरुद्ध संगम को निम्नवत परिभाषित किया गया है :

"(छ) 'विधि विरुद्ध संगम' का अर्थ उस संगम से है जो

- i. अपने उद्देश्य के लिए किसी गैर कानूनी गतिविधि में भाग लेती है या जो किसी गैर कानूनी गतिविधि को करने के लिए व्यक्तियों को उकसाती है या सहायता प्रदान करती है या जिसके सदस्य ऐसी गतिविधि में भाग लेते हैं।
- ii. अपने उद्देश्य के लिए ऐसी गतिविधि में भाग लेते हैं जो भारतीय दंड संहिता (1860 का 45) की धारा 153 क या धारा 153 ख के अंतर्गत दंडनीय है या जो व्यक्तियों को ऐसी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं या सहायता देते हैं या जिनके सदस्य ऐसी गतिविधियों में भाग लेते हैं।"

अधिनियम की धारा 2 (च) के अंतर्गत 'विधिविरुद्ध क्रियाकलापों' को निम्नवत परिभाषित किया गया है :

"(च) "किसी व्यक्ति अथवा संस्था के संबंध में 'गैर कानूनी गतिविधि' का तात्पर्य किसी व्यक्ति अथवा संगम द्वारा की गयी ऐसी कार्रवाई (कोई कार्य करके या शब्दों द्वारा बोलकर या लिखकर, अथवा संकेत द्वारा या प्रत्यक्ष कथन द्वारा या अन्यथा हो सकता है) से है :-

- i. जिसका उद्देश्य भारत के भू-भाग के किसी हिस्से को या संघ से भारत को किसी भी आधार पर पृथक करने के दावे का समर्थन करना है या जो किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह को ऐसे पृथक्तावाद या उसे अलग करने के लिए उकसाता है।

- ii. जो भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को अस्वीकार करता है, उसके बारे में प्रश्न उठाता है, उसे भंग करता है या भंग करने का इरादा रखता है।"

28. रिकार्ड पर पेश किए गए साक्ष्य को देखने से स्पष्ट होता है कि उपरोक्त दोनों संगठन अर्थात् नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा और ऑल त्रिपुरा टाइगर फोर्स विद्रोही, अलगाववादी और हिंसक गतिविधियों में लगे हुए हैं और नागरिकों, सेना व पुलिस कार्मिकों की हत्या करने, जनता व व्यापारियों से धन ऐंठने जैसे कार्यों का आश्रय ले रहे हैं ताकि गुप्त चैनलों के जरिए या विभिन्न सुरक्षा बलों से छीनकर अत्याधुनिक शस्त्र व गोलाबारूद प्राप्त किये जा सकें। इन संगठनों का अन्य पूर्वोत्तर अलगाववादी विद्रोही गुटों के साथ सम्पर्क है और उन्हें उनका समर्थन प्राप्त है। इन दोनों संगठनों का उद्देश्य त्रिपुरा को भारत से अलग करके एक अलग राज्य बनाना है या किसी भी स्थिति में त्रिपुरा समेत सभी सातों पूर्वोत्तर राज्यों को प्रभुता सम्पन्न राज्य बनाना है। रिकार्ड पर प्रस्तुत साक्ष्यों से यह भी सिद्ध होता है कि यदि इन संगठनों को अपनी गतिविधियां जारी रखने की अनुमति प्रदान की जाती है तो वे विद्रोही और गैर कानूनी गतिविधियों में लिप्त हो जाएंगे। दोनों संगठन धन ऐंठने, लूटपाट करने जैसी विभिन्न हिंसक गतिविधियों में लगे हुए हैं और त्रिपुरा राज्य में कानून व व्यवस्था की स्थिति को बिगाड़ रहे हैं। उनके कार्यकलाप भारत की प्रभुसत्ता और क्षेत्रीय एकता को विघटित करने के लिए हैं और यदि इन्हें रोका नहीं गया तो न केवल विधिविरुद्ध कार्यकलाप बढ़ेंगे बल्कि राज्य में भारत से अलगाव का वातावरण भी सृजित किया जा सकता है। अतः उनके कार्यकलाप देश की प्रभुसत्ता और एकता के लिए स्पष्ट खतरा है। ये संगठन भारत के क्षेत्र के एक भाग को संघ से अलग करने का समर्थन कर रहे हैं और इसी प्रकार कार्य कर रहे हैं और अलग-अलग व्यक्तियों तथा व्यक्तियों के दलों को देश से ऐसा अलगाव करने के लिए दुष्प्रेरित कर रहे हैं। स्पष्टतया उनके कार्यकलाप अधिनियम की धारा 2 (घ) के अंतर्गत यथापरिभाषित विधि विरुद्ध कार्यकलाप हैं।

29. विभिन्न हलफनामों, दस्तावेजों, विभिन्न प्राधिकारियों की रिपोर्टों और अधिकरण के समक्ष किए गए शपथ साक्ष्यों से यह स्पष्ट है कि एन0एल0एफ0टी0 और ए0टी0टी0एफ0 नामक उपर्युक्त संगम बड़े पैमाने पर निम्नलिखित विधिविरुद्ध गतिविधियों में लगे हैं :

- (क) बहुत अधिक सिविलियनों तथा पुलिस एवं सुरक्षा बलों के कार्मिकों की हत्या करने,
- (ख) त्रिपुरा में वणिकों और व्यापारियों सहित आम जनता से बलात् धन ऐंठने,
- (ग) गुप्त या अवैध सरणियों से भारी मात्रा में अत्याधुनिक हथियार एवं गोलाबारूद प्रापण करने तथा एक पड़ोसी देश के जरिए उन्हें गुप्त रूप से त्रिपुरा में लाने,
- (घ) सुरक्षित आश्रयस्थल, प्रशिक्षण, शस्त्र एवं गोलाबारूद आदि की खरीद के लिए पड़ोसी देश में शिविर स्थापित करना तथा उनका रख-रखाव करना,

(ड.) त्रिपुरा के जनजातीय तथा गैर जनजातीय समुदायों के बीच साम्प्रदायिक झड़पें कराने और उन्हें भड़काने के लिए त्रिपुरा के अन्य जनजातीय उग्रवादी समूहों के साथ सम्पर्क स्थापित करना तथा उन्हें बनाये रखना ।

30. उपर्युक्त संगमों द्वारा की जा रही उक्त गतिविधियां अधिनियम की धारा 2(च) की परिभाषा के अंतर्गत स्पष्टतः गैर कानूनी गतिविधियां हैं । इसलिए ऐसी गतिविधियां करने वाले संगम निसंदेह ही अधिनियम की धारा 2 (छ) की परिभाषा के अंतर्गत विधिविरुद्ध संगम है । इसलिए केन्द्रीय सरकार का उक्त एन०एल०एफ०टी० तथा ए०टी०टी०एफ० नामक संगमों को विधि विरुद्ध संगम घोषित करने का निर्णय पूर्णतया न्यायोचित है । यह अधिकरण ऐसा कोई कारण नहीं देखता है जिसके आधार पर इस घोषणा की सम्पुष्टि न की जाए ।

31. उपर्युक्त कारणों से, मैं संतुष्ट हूँ कि नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा तथा ऑल त्रिपुरा टाइगर फोर्स को विधि विरुद्ध संगम घोषित करने के लिए पर्याप्त कारण मौजूद था । तदनुसार, यह प्राधिकरण केन्द्र सरकार द्वारा विधि विरुद्ध कार्यकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 की धारा 3 की उपधारा (1) के अंतर्गत जारी की गई दिनांक 3 अक्टूबर, 2003 की अधिसूचना द्वारा की गई घोषणा की पुष्टि करता है ।

(आर. सी. जैन, जे.)

विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण)

अधिनियम, 1967 के अंतर्गत अधिकरण

मार्च 24, 2004

[फ़. सं. 9/6/2003-एन.ई.-1]

राजीव अग्रवाल, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 16th April, 2004

S.O. 502(E).—In terms of Section 4(4) of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967, the order of the Tribunal presided over by Hon'ble Justice R.C. Jain, Judge, Delhi High Court, to whom a reference was made under Section 4(1) of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 for adjudicating whether or not there is sufficient cause for declaring the associations, namely National Liberation Front of Tripura and All Tripura Tiger Force as unlawful is published for general information :—

**BEFORE THE TRIBUNAL UNDER THE
UNLAWFUL ACTIVITIES (PREVENTION) ACT, 1967**

(HON'BLE MR.JUSTICE R.C.JAIN)

**IN THE MATTER OF
ASSOCIATIONS, NAMELY
'NATIONAL LIBERATION FRONT OF TRIPURA'
AND 'ALL TRIPURA TIGER FORCE'**

AND

**IN THE MATTER OF
REFERENCE UNDER SECTION 4(1) OF THE
UNLAWFUL ACTIVITIES (PREVENTION) ACT, 1967**

ORDER

1. Vide Gazette Notification No.S.O.1164(E) dated 3rd October, 2003, the Central Government in exercise of powers conferred by sub-section (1) of Section 3 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 (37 of 1967) (hereinafter to be referred to as the 'Act'), declared the 'National Liberation Front of Tripura' and 'All Tripura Tiger Force' (for short 'NLFT' and 'ATTF') as unlawful Associations and having regard to the circumstances mentioned in the said notification formed an opinion that it was necessary to declare the 'NLFT' and 'ATTF' as unlawful Associations with immediate effect and accordingly in exercise of the powers conferred by the proviso to sub-section (3) of Section 3 of the Act, the Central Government directed that the

said notification shall, subject to any order that may be made under Section 4 of the said Act, will have the effect from the date of its publication in the Official Gazette. The said Gazette notification No.S.O.1164(E) dated 3rd October, 2003 reads as under :

**“MINISTRY OF HOME AFFAIRS
NOTIFICATION**

New Delhi, the 3rd October, 2003

S.O.1164(E).-- Whereas the National Liberation Front of Tripura (hereinafter referred to as the NLFT) has its professed aim, to establish an independent “Borokland Twipra” by liberation of Tripura from India through armed struggle in alliance with other armed secessionist organizations of Tripura and incite indigenous people of Tripura, for secession and thereby the secession of Tripura from India;

And whereas the All Tripura Tiger Force (hereinafter referred to as the ATTF) has its professed aim, the formation of a separate nation of seven sisters comprising Tripura, Assam, Manipur, Mizoram, Nagaland, Meghalaya and Arunachal Pradesh resulting in bringing about the secession of the said States from India, in alliance with other armed secessionist organizations of the North East region and to carry on armed struggle for separation of these States from India and thereby secession of these States from India;

And whereas, the Central Government is of the opinion that the NLFT and the ATTF have,-

- i. been engaging in subversive and violent activities, thereby undermining the authority of the Government and spreading terror and violence among the people for achieving its objective;
- ii. established linkages with other unlawful associations, viz., the United Liberation Front of Assam (ULFA) and Meitei extremist outfits of Manipur with the aim of mobilizing their support;
- iii. in pursuance of its aim and objective in the recent past, engaged in several violent and unlawful activities which are prejudicial to the sovereignty and integrity of India;

And whereas, the Central Government is also of the opinion that their violent and unlawful activities include,-

- (a) killing of civilians and personnel belonging to the Police and Security Forces;
- (b) extortion of funds from the public including businessmen and traders in Tripura;
- (c) procuring large number of arms and ammunitions, including sophisticated ones, through clandestine or illegal channels and inducting them secretly into Tripura through a neighbouring country;
- (d) establishing and maintaining camps in a neighbouring country for the purpose of safe sanctuary, training, procurement of arms and ammunitions, etc.;

- (c) establishing and maintaining linkages with other Tripura tribal extremist groups for causing and fomenting communal clashes between the tribal and non-tribal communities in Tripura;

And whereas the Central Government is of the opinion that the aforesaid activities of the NLFT and the ATTF are detrimental to the sovereignty and integrity of India and that they are unlawful associations;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 3 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 (37 of 1967), the Central Government hereby declares the National Liberation Front of Tripura (NLFT) and the All Tripura Tiger Force (ATTF) as unlawful associations;

And whereas the Central Government is also of the opinion that if there is no immediate curb and control, the NLFT and the ATTF will take the opportunity to,-

- i. mobilize their cadres for escalating their secessionist, subversive, terrorist and violent activities;
- ii. propagate anti-national activities in collusion with forces inimical to India's sovereignty and national integrity;
- iii. indulge in increased killings of civilians and targeting of the Police and Security Forces personnel;
- iv. procure and induct more illegal arms and ammunitions from across the international border;
- v. extort and collect huge funds from the public for their activities.

And whereas, the Central Government, having regard to the above circumstances, is of the firm opinion that it is necessary to declare the NLFT and the ATTF as unlawful associations with immediate effect; and accordingly in exercise of the powers conferred by the proviso to sub-section (3) of the said section 3, the Central Government hereby directs that this notification shall, subject to any order that may be made under section 4 of the said Act, have effect from the date of its publication in the Official Gazette.

[F. No.9/6/2003-NE.I]
RAJIV AGARWAL, Jt.Secy

2. Vide a subsequent notification No.S.O.1260(E) dated 31st October, 2003, the Central Government in exercise of its powers conferred by sub-section (1) of Section 5 of the Act constituted 'The Unlawful Activities (Prevention) Tribunal' with (hereinafter to be referred to as the 'Tribunal'), with the undersigned for the purpose of adjudicating whether or not there is sufficient cause for declaring the 'NLFT' and 'ATTF' as unlawful Associations. The said notification No.S.O.1260(E) dated 31st October, 2003 reads as under :

"MINISTRY OF HOME AFFAIRS
NOTIFICATION
New Delhi, the 31st October, 2003

S.O.1260(E).---In exercise of the powers conferred by Sub-section (1) of Section 5 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 (37 of 1967), the Central Government hereby constitutes "The Unlawful Activities (Prevention) Tribunal" consisting of Shri Justice R.C. Jain, Judge of Delhi High Court, for the purpose of

adjudicating whether or not there is sufficient cause of declaring the National Liberation Front of Tripura and All Tripura Tiger Force, as unlawful associations.

[F. No.9/6/2003-NE-I]
RAJIV AGARWAL, Jt.Secy.(NE)"

3. Vide a communication No.9/6/2003-NE.I dated 3rd November, 2003, a Reference under Section 4(1) of the Act was received from the Central Government along with a brief resume disclosing the aims/objectives and violent activities of 'NLFT' and 'ATTF'. The resume details out the following averments and allegations :

1. Tripura is facing insurgency for the last 20 years. Though around 20 armed tribal groups have been identified on ground, only National Liberation Front of Tripura and All Tripura Tiger Force are responsible for majority of killings and have some ideological mooring with main activities remaining confined to murders, looting, extortions, abductions, etc. for monetary gains. The violence is mostly targeted against non-tribals.
2. Both the National Liberation Front of Tripura (NLFT) and the All Tripura Tiger Force (ATTF) had been spreading secessionist tendencies by demanding separation of Tripura from rest of India and creation of a separate country. While NLFT has been demanding a separate country since its inception, the secessionist tendencies of ATTF have become more clear with its political wing Tripura People's Democratic Front (TPDF), formed in 1997, talking of 'national freedom' through an armed movement and terming Indian Army/Security Forces (Sfs) as 'Indian Occupation Forces' and India's Independence as their 'colonial bondage'. The ATTF has also been protesting against merger

of Tripura with India. Both the outfits not only believe in armed revolution and violence as a means to achieve their goal of over-throwing and democratically elected and legally constituted governments, but also have been indulging in frequent violence, killing innocent people and causing ethnic disturbances. Both the outfits have also been boycotting celebrations of National Days.

3. The violence and extortions by both the NLFT and the ATTF have been continuing despite declaration of 31 police stations in the State as fully/partially disturbed. While the violence of NLFT remains quite high, the violence of ATTF has shown an increasing trend. In fact, the violence of NLFT has been highest amongst all the North Eastern terrorist groups this year as it was during 1999-2001. Both the outfits have been advocating ouster of non-tribals, particularly Bengalis, from Tripura and attacking them whenever the outfits get an opportunity, giving rise to frequent ethnic clashes/tensions on the slightest provocation. Very strong undercurrent of tribal-non-tribal tension continues in the State due to the activities of these terrorist outfits.

4. The violence profile of ATTF & NLFT is given below:

Year	Number of persons killed (SE/Police) by	
	ATTF	NLFT
1999	42(7)	154(33)
2000	23(4)	216(11)
2001	47(9)	172(26)
2002	48(1)	114(40)
2003	39(6)	70(10)
(upto May 31)		

5. The ATTF, which was formed in mid 1993, has a membership of around 350 hardcore armed cadres and is led by Ranjit Debbarma. It is active in whole of Dhalai district, Khowai, Kalyanpur, Teliamura, Jirania, Takarjala and Sidhal PS areas of West

Tripura district, Kailashahar, Fatikroy and Kanchanpur PS area of North Tripura district and Birganj, R.K. Pur, Taidu & Ompi PS areas of South Tripura district. The NLFT, formed in 1989 and led by Biswa Mohan Debbarma, has an estimated cadre strength of 600 and arms holding of 350. It is known to have areas of influence in the whole of Dhalai district, Kalyanpur and Takarjala PS areas of West Tripura district, Kanchanpur and Vaghman PS areas of North Tripura district and Birganj, Taidu, Nutan Bazar, Shantir bazar and Ompi PS areas of South Tripura district. The declaration of 19 police stations in Tripura as 'disturbed area' in February 1997 and more areas subsequently has not in any way affected the activities of the NLFT. Rather, the outfit has been able to further strengthen its hold in different areas and emerge as the major terrorist group in Tripura.

6. Both the ATTF and the NLFT have training camps and hide outs in Bangladesh and have been using the Bangladesh territory frequently for taking shelter after indulging in major incidents of violence. Most of these incidents have been planned in and executed from Bangladesh soil. They have acquired a sizeable number of sophisticated weapons and are known to be maintaining close links with other North Eastern insurgent groups. Recent reports indicate a growing nexus between the NLFT and NSCN(IM) on the one hand and the ATTF and ULFA on the other, in their operations in Tripura.
7. These tribal extremists/armed miscreants have shown little hesitation in attacking Police/Security Forces and innocent non-tribals (particularly Bengalis) with a view to forcing them to leave Tripura. Most of the victims of the terrorists are non-tribals, particularly Bengalis. This has caused wide schism between the tribals and non-tribals in the State of Tripura leading to volatile ethnic situation, which gives rise to ethnic clashes on the slightest provocation.

8. The NLFT and the ATTF were previously declared as 'unlawful associations' under the 'Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967' with effect from 3rd October, 2001. The declaration has been extended from 3rd October, 2003 for a further period of 2 years.
9. Notwithstanding the fact that both the NLFT and the ATTF have continued to be banned for a period of six years now, tribal insurgency remains the most serious security concern in Tripura. Both the NLFT and the ATTF continue to resort to massive mobilization of funds by unlawful tax collections, extortion and even kidnapping and abduction for ransom. Procurement of arms by the NLFT and the ATTF has also been continuing. The following factors, therefore, have been taken into consideration before deciding on further extension of the ban:
 - i. both the NLFT and the ATTF continue to have self-styled constitutions which specifically speak of secession of Tripura from India by demanding separate State of tribal land as their ultimate objective;
 - ii. the NLFT and the ATTF have been responsible for a large number of violent incidents, looting of arms and ammunition from the Army and Police personnel in which a large number of Army, Police personnel and civilians have lost their lives;
 - iii. apart from this, both the NLFT and the ATTF continue to resort to extortions and illegal tax collections for the procurement of arms and ammunition as also for maintaining its leaders and cadres;
 - iv. both the NLFT and the ATTF have established links with other North Eastern extremist groups. The NLFT has reportedly developed close links with the Isak-Mulvah faction of the

National Socialist Council of Nagaland [NSCN (I/M)]. The ATTF, on the other hand, has links with the United Liberation Front of Assam (ULFA) and also with the Meitei extremists groups of Manipur;

- v. both the ATTF and the NLFT have training camps and hide outs in Bangladesh and have been using the Bangladesh territory frequently for taking shelter after indulging in major incidents of violence. Most of these incidents have been planned in and executed from Bangladesh soil;
 - vi. both the NLFT and the ATTF continue to procure illegal arms and ammunition. These are either being purchased from illegal arms merchants abroad and smuggled into the country or are being snatched from various security forces.
10. Views of the Government of Tripura, Ministry of Defence, Army Headquarters, Intelligence Bureau (IB), Cabinet Secretariat (R&AW), Central Reserve Police Force (CRPF) and Border Security Force (BSF) were invited on the subject of further extension of the ban on the NLFT and ATTF. These are summarized below:
- i. Government of Tripura have requested to continue the ban on the NLFT and the ATTF for a further period of 2 years beyond 2nd October, 2003 by issue of a suitable Notification.
 - ii. Ministry of Defence have recommended for extension of notification declaring both the NLFT and the ATTF as 'unlawful associations', beyond 2nd October, 2003.
 - iii. Army Headquarters have recommended that the notification declaring both NLFT & ATTF as 'unlawful associations' under the 'Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967, that expires

on 2nd October, 2003, be further extended for a period of two years.

- iv. Intelligence Bureau have in their note mentioned that ban on both the outfits should be continued.
 - v. Cabinet Secretariat (R&AW) have stated in their note that in view of the subversive activities carried out by these organizations, leading to a serious law and order problem in the State, it would be justified that the notification declaring NLFT and RPA, erstwhile ATTF as unlawful associations under the 'Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 is extended beyond 2nd October, 2003.
 - vi. Central Reserve Police Force have recommended to extend the notification declaring NLFT and ATTF as 'unlawful associations' under the 'Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967' beyond October 2, 2003 for carrying out effective Counter Insurgency Operations against the extremists of these outfits in the State.
 - vii. Border Security Force have recommended declaration of NLFT and ATTF as 'unlawful associations' under the 'Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967' beyond 2nd October, 2003. BSF have stated in their note that the situation in the border areas is not peaceful, as both NLFT and ATTF activists have been indulging in acts of violence, kidnapping and extortions, thus creating an insecure environment. These militant organizations have established their camps in Bangladesh territory and secured support of foreign agencies who have inimical designs towards India.
11. In brief, the following reasons are listed in support of further declaration of both the NLFT and the

ATTF as 'unlawful associations' under the 'Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967' with effect from 3rd October, 2003:

- i. continued espousal of the policy of secession of Tripura from India by the NLFT and formation of a separate nation of seven sisters by the ATTF.
 - ii. continued engagement in activities prejudicial to the sovereignty and integrity of India.
 - iii. continued adoption of violence and terror through armed action as a means for achieving their objective.
 - iv. high levels of extortions and illegal tax collections from the public including businessmen, traders and even Government employees.
 - v. links and support to other North-Eastern insurgent groups. While the NLFT has developed links with the Isak-Muitvah faction of the National Socialist Council of Nagaland [NSCN (I/M)], the ATTF has developed links with the United Liberation Front of Assam (ULFA) and the Meitei extremist groups of Manipur.
 - vi. continued maintenance of sanctuaries, safe havens and training camps in neighbouring Bangladesh.
 - vii. procurement of large number of sophisticated arms and ammunition through clandestine channels or by snatching from various security forces.
12. In view of the above, further declaration of both the National Liberation Front of Tripura (NLFT) and the All Tripura Tiger Force (ATTF) as 'unlawful associations' under section 3(1) read with proviso to

section 3(3) of the 'Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967' was considered necessary after the expiry of the validity of the previous notification dated October 3, 2001. This is likely to discourage them from openly propagating their negative aims and activities and seeking support of the public. It would also prevent their sympathizers from harbouring and assisting the ATTF and the NLFT."

4. On receipt of the Reference, a preliminary hearing of the Tribunal was held on 14th November, 2003 in which the Central Government was represented by Mr.K.K.Sud, Additional Solicitor General of India and others and Mr.R.R.Jha, Director, Ministry of Home Affairs, while Mr.Gopal Singh, Advocate along with Mr.K.Ambuly, Joint Secretary, Home Department, Government of Tripura, represented the State Government of Tripura. Taking note of the above referred notifications and reference, the Tribunal directed that separate notices as envisaged by Section 4(2) of the Act be issued to the 'NLFT' and 'ATTF' to show cause within 30 days from the date of service/publication of the said notices as to why the said Associations should not be declared unlawful and why the order should not be made confirming the declaration under sub-section (1) of Section 3 of the Act. The notices, inter alia, were directed to be served in the following manner:-

1. Copies of the notices be affixed at some conspicuous part of the offices, if any, of the above Associations;

ii. By proclaiming by beat of drums or by means of loudspeakers, the contents of the notice in the area in which the activities of the Associations are ordinarily carried out;

iii. By publication of the notices in two National daily newspapers (in English and Hindi) and also in one prominent Local paper in vernacular language, which is under circulation in the State of Tripura; and

iv. By making announcement on All India Radio and telecasting on Doordarshan from the Local Broadcasting and Transmission Stations of the State of Tripura.

5. It was further directed that the service of the notices be effected through all the above modes within ten days and compliance in regard to service of notices be reported to the Registrar of Tribunal by the competent officers of the State/Central Government by filing their affidavits within three weeks. The Central Government and the State Government of Tripura were also called upon to file the affidavits of their witnesses and material/documents on which reliance was placed by them in support of the allegations and grounds on the strength of which the above referred Associations had been declared unlawful within four weeks. Affidavits of Mr.R.R.Jha, Director, Ministry of Home Affairs, Government of India and that of Mr.R.C.Poddar, Joint Resident Commissioner, Government of Tripura were filed confirming that the notices were

issued/published in the name of the Associations in accordance with the specified modes and copies of citations and other communications were also filed in support thereof.

6. The next hearing of the Tribunal was held on 8th January, 2004 and the Tribunal noticed that despite the due publication of notices and due publicity given on Radio and Television, neither of the two Associations 'NLFT' and 'ATTF' has shown any cause as to why the said Associations be not declared unlawful within the stipulated period as prescribed in the notices or even upto the date of hearing. These Associations have also gone unrepresented before the Tribunal on that day and even on subsequent hearings. However, affidavits of Mr.R.R.Jha, Director, Ministry of Home Affairs and Mr.R.C.Poddar, Joint Resident Commissioner, Government of Tripura were filed on behalf of the Central Government and the State of Tripura respectively. A supplementary affidavit of Mr.K.Ambuly, Joint Secretary, Ministry of Home, State Government of Tripura was also filed. On request being made from the side of the Central Government and the State Government of Tripura, opportunity was granted to produce the affidavits of the witnesses whose names appear in Annexure-IV of the affidavit of Mr.R.C.Poddar as also liberty granted to file the affidavits of additional

witnesses, if it was considered necessary. Time was extended and affidavits of 21 witnesses have been filed in support of the Reference.

7. Having regard to the circumstances that the activities of the 'NLFT' and 'ATTF' were stated to be conspicuous and prevalent in the State of Tripura, it was considered necessary to hold a hearing of the Tribunal at the State Headquarter at Agartala, Tripura. Accordingly, after duly notifying the date, time and venue of the hearing, the Tribunal held its two sittings at the Circuit House, Agartala from 11.00 A.M. onwards on 20th and 21st February, 2004. On both the days, there was no representation on behalf of any of the Associations, namely, NLFT and ATTF despite calls having been given at the venue and in this way, the Associations remained unrepresented even at the hearings at Agartala.

8. In the hearing held on 20th February, 2004, following 12 witnesses were examined on behalf of the Central Government and the State of Tripura:-

- i. Sh.K.Ambuly, Joint Secretary, Home Department.
- ii. Sh.Ashutoosh Jindal, District Magistrate & Collector, West Tripura.
- iii. Sh.Bijoy Kumar Nag, SDPO, Jirania.

- iv. Sh.Sankar Debnath, SDPO, Telliamura.
- v. Sh.Bhaskar Chakraborty, Inspector (CID).
- vi. Sh.Ranjit Deb, SI (CID).
- vii. Sh.Pranab Sengupta, OC, PS Takarjala.
- viii. Sh.Gamanjoy Reang, OC, Longtharai Valley.
- ix. Sh.Sanat Paul, SI (Vigilance).
- x. Sh.Bir Kumar Debbarma, SI, PS Manu.
- xi. Sh.Babul Das, OC, PS Kamalpur. &
- xii. Sh.Debashis Banerjee, SI, PS East Agartala.

9. Statements of following 7 public witnesses were also recorded on 20th February, 2004:-

- i. Sh.Paresh Sarkar.
- ii. Sh.Suresh Sarkar.
- iii. Sh.Narendra Debnath.
- iv. Sh.Promode Sarkar.
- v. Sh.Bishu Kumar Debbarma.
- vi. Sh.Pradip Debnath, and
- vii. Sh.Nimai Das.

10. In the hearing held on 21st February, 2004, following three witnesses were examined:-

- i. Mr.T.B.Roy, Superintendent of Police, West Tripura.
- ii. Mr.Puneet Rastogi, Superintendent of Police (SB),

Tripura Agartala, and

iii. Mr.B.N.Debbarmar, Superintendent of Police (CID),
Tripura, Agartala.

11. The next hearing of the Tribunal was held in Delhi on 5th March, 2004 when two witnesses, namely Mr.R.C.Poddar, Joint Resident Commissioner, Government of Tripura and Mr.R.R.Jha, Director (NE-II), Ministry of Home Affairs, Government of India, were examined on behalf of the State Government and Central Government respectively and thereafter the counsel representing both the Central Government and the State Government closed their evidence.

12. Mr.R.C.Poddar, Joint Resident Commissioner, Government of Tripura, fully affirmed and confirmed to the contents of his affidavits in regard to the various incidents and activities in which the above associations are involved. The said incidents and activities are as under :

1. During last assembly election ATTF gave a boycott call urging the public not to take part in the Assembly Election held in February, 2003 through its mouth piece "Chwaba" published on 2nd-3rd December, 2001.

- ii. The ATTF gave a boycott call of Independence Day celebrations in their newsletter 'Chaubu' and 'Homechang.
- iii. In order to achieve their objectives, ATTF along with Manipur base extremist organization MPLF (Manipur People Liberation Front) and ULFA have launched "Operation Freedom" in all the three States in the 3rd week of June. A number of violent incidents have already taken place in the three States as a part of Operation Freedom.
- iv. Some of the recent incidents have indicated that ATTF has been able to procure a large amount of Land Mines, Rocket Launchers, RPGs etc. which they are using against security forces. This has been corroborated by reliable information received from various channels.
- v. During last Republic Day and Independence Day, both the ATTF & NLFT gave call for boycotting the celebrations and raised black flags in the interior places of Tripura in order to prohibit the public from attending the functions organized for celebrating the occasions.

13. He further stated that both ATIF and NLFT and their factions have set up their camps in foreign country from where they are carrying out their operations inside Tripura. They have collected arms with the help of foreign agencies as well as other under-ground outfits viz. ULFA, NSCN and are forcibly extorting money from the common people in the name of 'tax'.

14. He further stated that ATIF has changed its name as Revolutionary Peoples Army (RPA) as it is evident from their organization news paper "Chawba" dated 3 April, 2003 seized during investigation.

15. In his affidavit, he has detailed out some of the heinous crimes committed by the NLFT which are as follows:-

1. IN THE YEAR 2002

On 03.02.2002, at about 0815 hrs Inspector, Hari Mohan Das O/C Ambassa PS along with SDPO, Ambassa with one platoon Tripura State Rifles (TSR) was proceeding towards Shibbari Damcherra area for conducting special operations. At about 10.30 hrs when the party reached near Shibbari a group of NLFT Extremists fired upon the police party with sophisticated arms and police party also opened fire in exercise of the right of self-defence.

Subsequently after firing, the area were searched when two dead bodies of NLFT Extremists namely Haripada Malsum S/O Amar Manik Malsum of Kuldi and Kupi Malsum S/O Monmohan Mulsum were recovered. Some documents of NLFT and one Chinese live grenade were also recovered from the spot. (Ambassa PS case No.06/02 U/S 148/149/353/307 IPC and 27 Arms Act/ 3/5 E.S. Act & 10/13 of ULA(P) Act).

- ii. On 09/02/2002 one platoon of 51 Bn CRPF under command of Shri V. P. Singh, Deputy Commandant conducted operations in village Herma. At about 1330 hrs two persons were seen fleeing away after seeing the CRPF. When CRPF tried to challenge them, one of them opened fire and also threw a grenade. In self-defence, the CRPF opened fire and as a result one extremist died and the other was arrested. During search one 0.32 revolver, 3 live cartridges, Indian currency worth Rs.1000/- and Bangladesh taka worth 19,000 were recovered from arrested Ranjit Debbarma. One tax receipt book of NLFT and one personnel diary was also recovered.

The dead body was identified as Major Benjamin Hrangkhwal operational commander of NLFT (NB). (Bishalgarh PS case No.08/02 U/S 307 IPC, 25/27 of Arms Act & 10/13 of ULA (P) Act).

iii. On 09.04.2002 a party of 22 Bn of Assam Rifles (in short A.R.) was performing patrolling duty of Bharat Chowdhury Para at about 1155 hrs. When the party was crossing the house of one Soyla Ram Debbarma, a group of militants fired upon the A.R. Party. As a result No.2200936 Rfm R.C.Joshi sustained injuries. In private defence the A.R. Party also retaliated. As a result one extremist namely, Jyoti Ranjan Debbarma was killed and the other extremists were arrested. During search (i) one A.K. 56 rifle (ii) 56 nos of cartridge of A.K. 56 (iii) Hand Grenade (iv) Indian currency of Rs.1906 (v) Tax collection letter and others incriminating articles were recovered. (Salema PS case No.10/02 U/S 353/326/307 IPC 27/28 Arms Act and 10/13 ULA (P) Act).

iv. On 16.04.2002 at about 0100 hrs O/C STB PS received information that a group of extremist will

come to Khathalia Para on 17.04.2002 for collection of subscription. Accordingly O/S Shantir Bazar (in short STB) PS along with Tripura State Rifles (in short TSR) staff and constables lay in wait on the jungle road. On 17.04.2002 at about 06.00 hrs O/C STF found 4 NLFT armed extremist proceeding towards Kathalia Para. On being challenged, the extremist group fired upon police party. Police also opened fire as result one extremist namely Rabindra Reang died on the spot. One country made gun and one empty cartridge, two detonators with electric wire, subscription note of NLFT etc. were recovered from his possession. (Santribazar PS Case No.07/02 U/S 148/145/353/307 IPC 25(B) 27 Arms Act and 10/13 ULA (P) Act).

- v. On 10.07.2002 SI Subir Ahmed O/C TKJ PS along with Subedar Paresh Debbarma and 2 platoon of TSR conducted special operation at Arjun Thakur Para. While they were performing search and combing operations, a group of Armed Extremists of NLFT (BM) started firing upon them from sophisticated arms. The TSR party also retaliated

the fire which continued for an hour. After firing, search was conducted in the jungle and two dead bodies of unknown extremists were found in jungle uniform along with (i) Chinese rifle (ii) Two Magazine (iii) 67 rds of 7.62 SLR (iv) Pithu etc were seized. (Takarjala PS Case No.07/02 U/S 148/149/353/307 IPC, 25(A) Arms Act, 13/10 ULA Act.

- vi. On 26.07.2002 at about 1400 hrs, ONGC officers were returning to Agartala from Digendra Para drilling site (Under Takarjala PS) with escort party of TSR and CISF. As soon as they reached about ½ km towards Agartala, the extremist group started firing from both side of the road. Due to this attack 4 TSR and 2 CISF personnel along with one driver of escort vehicle died at spot. Due to counter fire by TSR & CISF one extremist also died at spot. Extremist looted away one SLR of TSR and one SLR of CISF. (Takarjala PS Case No.11/02 U/S 396/390 IPC 25(A)/27 Arms Act and 10/13 ULA (P) Act).

IN THE YEAR 2003

- i. On 26.01.2003 around 2000 hours, a group of NLFT extremists raided the village Dusmantapara with AK series weapon and started firing. As a result, 11 persons died at the spot and 6 others were injured. (Jirania PS case No.5/2003 U/S 148/149/326/307/302 IPC and 27 Arms Act).
- ii. On 26.02.2003 at 1505 hours when after the Assembly Polls, the polling parties were returning under escort of one platoon of BSF, they came under heavy fire of NLFT extremist at Santarampara. As a result 5 BSF personnel and one civilian driver were killed at the spot and 4 others were injured. They also snatched away 3 SLR, one carbine, 7 SLR Magazine, one carbine magazines, total 180 rounds and Motorola hand set. (Jirania PS case no.22/2003 U/S 148/149/302/307/326 IPC and 27 Arms Act).
- iii. On 28-2-03, while going towards Kutia Bagan, a group of 32 Bn CRPF of Belbari came under the fire of militants. As a result one CRPF jawan was killed at the spot and two others were injured. One A.K.

47 Rifle with Magazine with 30 rds was snatched away by the extremists. (Jirania PS 25/03 U/S 302/326/379/34 IPC & 27 Arms Act).

- iv. On 13.03.2003 at 1045 hours when the CRPF Convoy Ex-Chakmaghat camp, 42 BN reached 45 Miles on N.H -44, suddenly an IED blasted. As a result 3 CRPF Jawans and one civilian driver were killed at the spot and 4 others were injured. (Teliamura PS case no.119/2003 U/S 148/149/302/435 IPC & 3 of E/S Act).
- v. On 27-3-03 the vehicle on escort of ADGP Tripura came under a heavy firing of NLFT (B/M) at Sadhu Para under JRN PS. As a result one security personnel H/C Ranjit Singh of 1st Bn TSR expired at SSKM Hospital on 31-3-03. (Jirania PS Case No.31/03 u/s 148/149/326/353/427 IPC & 27 Arms Act).
- vi. On 29-3-03 RPF personnel came under heavy firing in an ambush by NLFT (B/M) group. As a result 5 RPSF personnel & 2 civilians were killed & 3 others were injured. They also looted 5 arms of the RPSF. (Manu PS case No.15/03 U/S

148/149/353/396/302 IPC & 27 Arms Act).

- vii. On 8-4-03 a group of NLFT (B/M) Extremists raided the house of Mohan D/Barma of Mainoya Kr.Para and started firing indiscriminately as a result two person died at spot and 3 others were injured. (Raishya Bari PS Case no.5/03 u/s 302/326 IPC & 27 Arms Act).
- viii. On 15.06.2003, S.I. G.J.Reang O/C Latiachera PS with one platoon SPO and CRPF went on Spl. Operation at Tuchindraipara. At that time 11/12 armed extremists of NLFT (BM) threw 2 grenades upon the party and started firing as a result H/C Iqbal Khan, Constable, P.K.Biswas, Constable S.Senapati received bullet injury. Ops party recovered one dead body of extremist, one AKM rifle with 3 Magazine, 76 Rds. Later on the dead body was identified as Charanjoy Reang, self style area commander of NLFT (BM). (Longtharai Valley PS case no.7/2003 U/S 148/149/353/307/326 IPC, 25(i)(a)(b)/27/28 Arms Act, 3/5 E.S.Act and 10/13 ULA Act.

- ix. On 16.07.2003 at 2000 hours 7/8 armed extremists dressed with O.G. Led by Madab Marak entered into the house of Keshab Lal Halam and shot dead Keshablal Halam and one Lalming Singh Halam. Deceased Keshablal Halam was NLFT extremist who escaped from Bangladesh camp. (Kachucherra PS case no. 13/2003 U/S 148/149/302/326 IPC and 27 Arms Act).
- x. On 16.07.2003 at 2100 hours 8/10 armed NLFT extremists led by Madhab Marak shot dead Neitaiyel Bul Halam and his son Rulthal Sena Halam. (Ambassa PS case no. 36/3003 U/S 148/149/302 IPC and 27 Arms Act).
- xi. On 22.07.2003 at 2220 hrs 10/12 armed NLFT extremists raided the house of Gajendra Reang of Nakuljoy para and enquired about his son Makhanjoy Reang who had escaped from NLFT camp at Bangladesh. As Makhanjoy Reang was available the extremist shot dead Gajendra Reang and Smt. Jumarung Reang. (Manu PS case no. 37/2003 U/S 302/34 IPC).
- xii. On 29.07.2003 morning 3 unknown extremists

entered in the house of Prabir Debbarma at Kalicharanpara and opened fire indiscriminately to the house inmates as a result 4 persons died at the spot. The cause of this incident is to take revenge as two members of this family, who were NLFT members, have surrendered before security force. (Champahawar PS case No.49/2003 U/S 448/302/34 IPC and 27 Arms Act).

- . xiii. On 31.07.2003 at 1930 hours while an Ops party under the leadership of Brajendra Debbarma, C.I. Takarjala was proceeding towards Amtali, they suddenly came under fire of extremist. The Ops party also retaliated with fire when the exchange of fire stoppped; the Ops party searched the area and recovered one dead body of NLFT extremist with one AK-56 Rifle, Magazine -2, Rounds-101 and one Chinese grenade. (Takarjala PS case no. 25/2003 U/S 148/149/333/307/124A/120B/153B IPC, 25(a) Arms Act & 10/13 ULA Act).
- xiv. On 01.08.2003 at 2015 hours the NLFT extremists appeared in the house of Prakash Debbarma and kidnapped his younger brother Prantosh Debbarma

at the same day. They also kidnapped Sanjit Debbarma and Bapi Debbarma of Jamadarbari. Since then all of them were untraced. Three highly decomposed dead bodies recovered from jungle on 28.10.2003. Bodies have been identified from the wearing apparels. (Khowai P.S. Case No. 86/03 U/S 364/302 IPC).

xv. On 11.08.2003 night a contingent of 6th Bn. A.R. Conducted SPL. Ops at Gangaharipara and while they were returning on 12.08.2003 at 0715 hours, they came under heavy fire from suspected NLFT extremist, as a result 3 A.R. Jawans died at the spot. (Takarjala PS case no. 28/2003 U/S 148/149/333/307/124A IPC & 27 Arms Act).

xvi. On 25.08.2003 at 1015 hours an exchange of firing took place between extremists and Spl. Ops party led by Sri Prabir Majumdar, SDPO, Ambassa at South Kulai Gantacherra. In this exchange of fire one Lalit Debbarma an NLFT (BM) extremist died at the spot and recovered the following articles. (i) AK-47 magazine - 2, (ii) AK-47 rounds -16, (iii) Chinese grenade - 1, (iv) Camera - 1, (v) NLFT pad and

subscription books, (vi) Cash Rs.60,019/-.

(Ambassa PS case no.43/2003 U/S 148/149/353/307 IPC, 5 of E/S Act and 10/13 ULA Act).

xvii. On 13.09.2003 around 1925 hours 10/12 armed NLFT extremists appeared at Kunja Beharipara PS Ranirbazar and called one Monoranjan Debbarma from his shop and shot him dead. Thereafter the group went to Dasrambari and fired at Bimal Debbarma (25) and Dhaniram Debbarma (22) in front of a shop. (Jirania PS case No.86/2003 U/S 148/149/302 IPC & 27 Arms Act).

xviii. On 23.09.2003 at about 0730 hours H/C Ruhit Miah, Incharge of Shermoon Tilla, 4th Bn. TSR camp with the help of 5 NLFT (NB) extremists looted away SLR - 9, LMG - 1, Carbine - 1, old bolt action rifle -2, wireless - 1, VHF set - 2 by killing 3 TSR Jawans and also causing injuries to other 3 persons. (Kumarghat PS case no. 48/2003 U/S 120B/396/307/326 IPC).

xix. On 29.09.2003 around 1645 hours 6/7 armed extremists appeared in the house of complainant

Bibindra Debbarma at Durnichera and tried to kidnap his grand-daughter Gandhabi Kanya Debbarma. On being resisted, the extremists fired and killed Dipali Debbarma (35) and Smt. Mijurani Debbarma at the spot. The extremists entered into the house of Sukdeb Debbarma and fired upon Subal Chandra Debbarma, Surjalaxmi Debbarma and Bikash Debbarma who also died at spot and others 3 were injured (total killed 5). (Kamalpur PS case no. 63/2003 U/S 148/149/302/326 IPC & 27/28 Arms Act).

- xx. On 18.10.2003 morning S.I. J.Roy of Nutanbazar P.S. Along with one platoon 20 Bn. CRPF personnel led by Assistant Commandant Suraj Dhar conducted special operation at Diverdampara. While the operations party reached at Debendra Para suddenly extremists group started firing, as a result Constable Mustak Ahammed Kandha died and one SLR with 20 rounds loaded magazine were lost. (Nutanbazar PS case no. 23/2003 U/S 396/320/307 IPC & 27 Arms Act).

xxi. On 01.11.2003 at 1600 hrs 5/6 NLFT (BM) extremist led by Tipu Mohan Jamatia came to the house of Padma Charan malsom at Lailakbari and kidnapped (i) Chandra Mohan Malson (31), (ii) Bhagyahari (15), (iii) Bhagya Shingh (9), (iv) Bhagya Bashi (4), (v) Haripada (1) and killed them in the jungle. (Killa P.S. Case no. 13/2003 U/S 364/302 IPC & 27 Arms Act.

16. He has also detailed out some of the heinous crimes committed by the ATTF which are as follows:-

1. IN THE YEAR 2002

On 25.09.2002 at about 0200 hrs, a platoon of 32 Bn. CRPF lay in wait near Char Gharla on the information that hard-core self-styled extremist Major Jagadish D/Barma @ Jestor may move on the road. At about 16.15 hrs they found one Maruti Van and motor bike coming from Chargharla side. The rider of the motor bike was identified as Jagadish Debbarma and was detained and one 9 mm pistol with 15 rds and cash Rs.66,035 were recovered from him. Later, it was learnt that a cash reward of Rs.1.00 lakh had been

declared for him by the Government of Tripura.
(Jirania PS Case No.89/02 U/S 120(B)/121/124(A)
IPC and 25(1)(B) Arms Act & 10/13 ULA Act).

- ii. On 23.12.2002 at 0130 hrs. Pinaki Samanta, Assistant Commandant TSR lay in wait at Bairagi Para Sidhai PS. In the early morning at 07.15 hrs some extremists were found approaching towards them with sophisticated weapons like A.K. Rifle. When the group was challenged, they started firing. As a result, one rifleman Binay Roy sustained bullet injury & subsequently expired on way to Hospital. (SDI PS Case No.90/02 U/S 148/149/307/302, 27 Arms Act & 13 of ULA Act).

IN THE YEAR 2003

- i. On 07.03.2003 around 2345 hours when A.R. Personnel reached Gumsinghbari for special operations, ATTF extremists fired upon A.R. Personnel which was returned by them. During search, the security force recovered the dead body of Shyamal Tanti, a listed ATTF extremist and also recovered (i) Electric detonator - 13, (ii) AK-47 live round - 2, (iii) AK-47 empty round - 5, (iv) .12 bore

C/M gun - 1, (v) Flexible wire - 5 metres.

(Champahawar PS case No. 49/2003 U/S 148/149/307 IPC, 25(a) A. Act & 3 E/S Act).

- ii. On 06.05.2003 morning when A.R. Personnel conducted special operations at Ratanpur Market area, they challenged one Parimal Debbarma. He tried to escape by firing at the security forces. In self defence A.R. Personnel also fired and captured him. On .22 revolver, one magazine and 3 live rounds were recovered from him. Parimal Debbarma expired on way to hospital. (Khowai PS case No. 76/2003 U/S 307 IPC & 27/25(A) Arms Act).
- iii. On 05.07.2003 at 0535 hours 10 CRPF personnel were coming to Kalyanpur from Baramaidan in two vehicles. When the vehicle reached Balukata, the first vehicle came under explosion and was fired at by the extremists. As a result, 3 CRPF Jawans received injuries. (Kalyanpur PS case no. 30/2003 U/S 326/307 IPC and 3/5 E.S. Act).
- iv. On 7.5.03 at 2050 hrs 10/12 ATTF armed extremists raided Mohan Cherra Market under

Kalyanpur PS and fired indiscriminately. As a result, 9 persons were killed at the spot and 3 others injured. (Teliamura PS C/No.70/03 U/S 148/149/326/302 IPC & 27 Arms Act).

- v. On 6-5-03 night a group of ATTF Extremist armed with sophisticated weapons raided the village Simna colony and fired indiscriminately. They also set fire to the houses as a result of which 19 persons were killed, 6 (six) persons injured and a good number of cattle were killed. (Sidhai PS Case No. 46/03 U/S 148/149/326/302/436 IPC & 27 Arms Act).

17. According to him, the number of incidents committed by ATTF and NLFT in Tripura during the year 2002-2003 are as under:-

Year	Incidents committed by		Civilians killed		Security Forces killed		Persons kidnapped	
	NLFT	ATTF	NLFT	ATTF	NLFT	ATTF	NLFT	ATTF
Jan. 2002-Oct. 2003	365	111	183	132	67	13	257	46

18. Towards the end of his affidavit, he has stated that in the light of the facts stated in the affidavit, Notification No.S.O.1164(E) dated 3rd October, 2003 issued by the

Government of India in exercise of the powers conferred by sub-section 1 of Section 3 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 declaring National Liberation Front of Tripura (NLFT) and the All Tripura Tiger Force (ATTF) and their factions as Unlawful Associations, published in the extra ordinary issue of the Gazette of India, is for sufficient cause and is justified and in accordance with law and he prays that in these circumstances, this Hon'ble Tribunal may be graciously pleased to confirm the declaration made by the Government of India in the said Notification.

19. Mr.R.R.Jha, Director held out in his deposition that the reports of various authorities/agencies as referred to in the resume are available in his Ministry and they can be made available to the Tribunal for its perusal. The reports were subsequently submitted for the perusal of the Tribunal and after perusal, were returned in the sealed cover.

20. I have heard Mr.K.K.Sud, learned Additional Solicitor General representing the Union of India and Mr.Gopal Singh, Advocate for the State of Tripura.

21. As noticed above, the Inquiry in the present reference proceedings have gone ex parte as no one from the side of the above named Associations has shown any cause as to why the Associations should not be declared unlawful and, therefore,

strictly speaking, going by the averments and allegations made and the material brought on record which has remained un rebutted, the Tribunal can at once hold that no cause has been shown for not declaring the said Associations as unlawful Associations. However, with a view to satisfy itself, the Tribunal has more fully and in detail has examined the entire material placed on record.

22. The above named witnesses have fully affirmed to their affidavits and reiterated various incidents. In particular, they have fully substantiated the averments and allegations made in their depositions. Their depositions establish the following incidents/various activities of the Associations.

23. The NLFT and ATTF have been engaged in committing of following incidents as is appearing from the affidavits filed by the above witnesses in support of the reference and from their statements recorded before the Tribunal:-

- (i) On 14th August, 2003 at about 21.00 hrs., a group of ATTF extremists attacked the village Baralunga. They were armed with guns and other weapons and they attacked villagers and killed 16 people including 6 children and 6 others were injured. The incident lasted

about 10 to 15 minutes. Earlier to this incident, the members suspected of ATTF kidnapped 2 persons and killed one person.

(ii) On 14th August, 2003, terrorist of ATTF and NLFT raided a number of villages and on the same day, my village was also raided at about 9.00 P.M., they started indiscriminate firing in which 14 persons were killed and 3 persons sustained bullet injuries. My wife 'Suprava Debnath' was also killed in that firing. On the same date and time another group attacked village Barlunga Kishnapur and killed 16 people. They were wearing military colour uniform.

(iii) On 6th May, 2003 around 11.30 P.M. extremists of ATTF and NLFT attacked my village and started firing indiscriminately as a result of which my wife, two sons, mother, brother and sixteen others of my village were killed and myself, my niece and two others sustained severe injuries. As a consequence of the injuries sustained by me in the said

attack, my left hand had to be amputated. The extremists burnt the houses and dead bodies. They were 70-80 in number and equipped with sophisticated weapons.

- (iv) On 25th February, 2003 in the evening at about 5/6 P.M., some 7 or 8 NLFT extremists with sophisticated arms kidnapped me from my house and I was warned not to work in the election in favour of CPI(M). Thereafter the Police recovered me. During my detention with them, I was assaulted with lathis. Thereafter, sometime in May, 2003 NLFT group again came to our village and killed one minor child. Somewhere in April, 2003, NLFT extremist group kidnapped 5 minor boys of 6 or 7 years age from my village and all of them were released after payment of Rs.2 lacs as ransom money. On 30th September, 2003 at about 7.30 P.M., NLFT extremists group attacked the village Dashram bari and Kunjabehari Para and killed 3 persons by firing.

- (v) On 26th January, 2003 at about 8.00 P.M., a group of NLFT extremists numbering 10 to 15 headed by Biswamohan Debbarma raided the village Dusmanta Narayan Para and started indiscriminate firing as a result of which 11 persons were killed and 5 were injured.
- (vi) On 13th August, 2003 at about 7.30 P.M., a group of 20 to 30 ATTF extremists armed with weapons raided our village and started indiscriminate firing on the villagers as a result whereof, three persons were killed and four were injured. The Police reached there and saved us. Two years ago, one person Manik Deb went for grazing his cattle in the forest who was killed by ATTF people. The extremists groups are regularly extorting money from the villagers in the name of collection of tax as well as ransom money from the kidnapped persons.
- (vii) One member of the extremists group (ATTF) was injured in the ambush on 29th August.

2003 and later on it was learnt that he died.

The number of extremists was about 18 to 19. They left one A.K.56 rifle. There was no casualty amongst the security forces in this incident.

(viii) In the year 2003, the ATTF alone killed around 40 persons and kidnapped 29 persons. The detailed activities of these Associations are also mentioned in my affidavit.

(ix) On the eve of the National day for instance on 14-8-2003 they have, in a cold blooded deliberate attempt, killed 31 non-tribal civilians including innocent children and women under Kalyanpur Police station and Tellamura Police station. On the eve of Independence Day 2003 they along with other outlawed organizations like NLFT of Tripura, ULFA and NDFB of Assam etc. had given a call for boycott. They raise black flags on these two occasions.

In addition to the above cited incidents, the NLFT and ATTF have also been engaged in other activities which are as under:-

- (i) That, from the source report it came to light that both NLFT and ATTF/TPDF/RPA continue to espouse secession of Tripura from the Union of India as their aim and object and to achieve their object, they continue to indulge in secessionist, violent, Subversive, and terrorist activities in Tripura. The Constitution of the NLFT and ATTF advocates secession from the India union as their objectives. They have maintained separate armed wing with a hierarchical set up on the pattern of the regular army equipped with large number of sophisticated weapons and explosives collected from abroad.
- (ii) That, from the various reports collected through different channels it is evident that since its formation the NLFT and ATTF/TPDF/RPA have been responsible for

large number of incidents involving mass killing, killing of security forces, kidnapping and extortion etc in Tripura.

- (iii) That, NLFT and ATTF/TPDF/RPA are extorting money from villagers, Government employees and Businessmen etc of the State through tax notices.
- (iv) That, ATTF/TPDF/RPA urged people of the State to boycott Independence Day and Republic Day. This has been published number of times in its mouth piece "CHOBA".
- (v) That, from various source reports as well as interrogation reports of NLFT and ATTF it is well evident that to achieve their objectives for establishing an independent "Borok land Tripura" by liberating Tripura from the Indian Union, the ATTF/TPDF/RPA are indulging in violent activities threatening the sovereignty of the country, disturbing public order thwarting development of the State and creating a reign of terror.

- (vi) Waging war against the State
- (vii) Forcefully collection of money from civilians
- (viii) Killing of innocent civilians as well as Govt. servant and Security Force, which turn in to ethnic problem between the communities of the State.
- (ix) Members of both the organizations carrying out their activities staying from foreign communities. It is evident that they set up training camp inside Bangladesh where from they are indulging in such activities.
- (x) They have their own so called Constitution, which enlightened that they want separate State out of Indian dominion. They are procuring large quantity of sophisticated Arms and Ammunitions from foreign countries through illegal ways and carrying out subversive activities and violent activities in the State.
- (xi) They are maintaining link with other underground extremist organization of North Eastern State and foreign machineries even

then getting training and financial help also.

- (xii) Kidnapping of innocent person including women, children, Govt. servant, Security Force members for realizing ransom. They are attacking security force personnel while on Govt. duty for restoring sovereignty of the State by killing them and snatching their Arms.
- (xiii) On 26-01-03 around 2000 hrs a group of NLFT extremist raided the village Dusmanta Para under Jirania Private Secretary with A.K. series weapon and started indiscriminate firing as a result 11 person died at the spot. This refers Jirana P.S. Case No.5/2003 U/S 148/149/326/307/302 IPC and 27 Arms Act.
- (xiv) On 26-2-03 at 1505 hrs when the polling parties were returning under escort of one platoon of BSF, they came under heavy fire of NLFT extremist at Shantaram Para as a result 5 BSF personnel and one civilian driver killed at the spot and four other

injured. They also looted away 3 SLR, 1 carbine, 7 LSR magazine and 1 carbine magazine and 180 Rds. with a Motorola Hand set. This refer to Jirania PS case No.22/2003 U/S 148/149/302/307/326 IPC and 27 Arms Act.

(xv) On the night of 14.8.03 at 2110 hrs a group of ATTF extremist surrounded the village Kamal Nagar under P.S. Kalyanpur and started indiscriminately firing on the houses of the village as a result 14 person died at the spot and 4 injured. This refers Kalyanpur PS case No.38/2003 U/S 148/149/302/326 IPC.

(xvi) On the night of 14-8-03 around a group of armed ATTF extremist cordoned the village Barlunga under P.S. Teliamura and fired indiscriminately to the houses of non tribals as a result 15 persons were killed at the spot and 7 others injured. This refers to Teliamura PS case No.99/2003 U/S 148/149/302/326 IPC and 27 Arms Act.

- (xvii) In the year 2003 many incident like man killing, kidnapping, extortion of money from common people took place which were committed by both NLFT and ATTF. On 26th January, 2003 about 1545 Hrs. a group of 19/20 NLFT extremist raided the village Dusmanta Narayan Para under Jirania PS and fired from their weapons indiscriminately on the villagers as a result 11 innocent villagers were killed and 6 (six) others sustained bullet injuries. This refers Jirania P.S Case No. 5/03/ u/s. 148/149/302/326 IPC add 27 Arms Act.
- (xviii) On 6.5.2003 night a group of 20/25 ATTF extremists raided Simna Colony with sophisticated Arms and killed 17 people and 6 other people sustained bullet injuries by indiscriminate firing of ATTF extremists. They also set fire in the village and gutted 4 houses. The cattle and goat also burnt by fire. Out of 6 injured persons two were died at G.B. Hospital. This refers SDI P.S. cases

No. 46/03 u/s 148/149/302/326/436 IPC
and 27 Arms Act.

- (xix) On 19.05.2003 one Suranjan Das, SDO, PWD, Kalyanpur, Jiban Paul and Surajit Bhattacharjee (both are contractor) want to Mukambari to supervise the road work. At 1300 hrs. 9/10 NLFT extremist in O/C dress kidnapped them on the point of gun. Subsequently they were released after paying ransom.
- (xx) On 22.12.2003 Mr.T.B.Roy with OC Sidhai P.S. had been to Parkholong on Debra Parkhalong road which leads to Khowai. At around 1530 hrs on way to SDI from Parkhalone at Dabrapara unknown Armed ATTF extremist attacked upon of a security person namely Braja Jamatia C/451 who was about to climb a hill to check the hill areas tactically as a result said Braja Jamatia constable of DAR succumbed to his injuries at spot. This refers SDI P.S. case No. 87/03 u/s 148/149/353/307/120(B)/302

IPC and 27 Arms Act.

(xxi) During the year 2003, WEST Tripura Police/District Task Force/TSR/Assam Rifles/CRPS under West Tripura District have recovered following Arms and Ammunitions from the hand of ATTF/NLFT extremist after encounter:-

1. AK-56 rifle - 1
2. AK-66 rifle - 2
3. Country made gun - 5,
4. Grenade - 1
5. Chinese grenade - 16, ammunition - 366,
3.5 Kgs. I.E.D. powder
6. 18 Nos. detonator
7. 9mm pistol - 1 with 10 nos rounds
8. Improvised 9mm pistol - 1
9. Improvised C/M revolver - 3,
10. 38 rogger revolver - 4
11. 22 pistol - 1
12. Chnes pistol - 1
13. 303 Bayonet - 1
14. SLR Rds. 358, G-3 rifle - 2

(xxii) During the tenure of Mr.T.B.Roy, he led number of operations against both the NLFT and ATTF extremist and understood that the members of ATTF/NLFT (as the case may be) alongwith their factions are involved therein and responsible for subversive activities. With the objective of achieving their professed aim

of establishing an independent 'BOROK LAND TRIPURA' by 'LIBERATING' Tripura from the Indian Union, the NLFT and ATTF and their factions have been indulging in secessionist and subversive activities which threatens the sovereignty of the country, disturbs public order and development of the State and creates terror among the people. They have procured Lethal Weapons such as Land Mines, Rocket Launchers, RPG's etc which they are using against security force with a view to establishing National Integrity.

(xxlii) That during the last Republic Day and Independence day, both the ATTF and NLFT gave a call for Boycotting the celebrations and raised black flags in the interior places of Tripura in order to prohibit the public from attending the functions organized for celebrating the occasions.

24. All the witnesses appearing on behalf of the Government of Tripura affirmed the contents of the affidavit of Mr.R.C.Poddar. The witnesses proved on record the extortion

notices issued by the banned organizations as well as the first information reports registered in respect of the offences committed by these organizations. It was stated by them that both the organizations were engaged in subversive and secessionist activities in many part of Tripura; they were operating from across the border from Bangladesh and it, therefore, becomes difficult for the police to curtail them. It was stated that the modus operandi of these organizations was to terrorise people with arms and threaten certain communities to leave certain areas of Tripura. They were also engaged in killing and kidnapping for ransom of innocent people and Government officials as a result of which development activities were hampered. The Constitution of the aforesaid banned organizations were also proved by the witnesses.

25. A perusal of the Constitution of All Tripura Tiger Force shows that the main objective of the Force is to form a separate country comprising of the seven States of North East, namely, Tripura, Assam, Manipur, Mizoram, Nagaland, Meghalaya and Arunachal Pradesh and for this the Force was to support all sorts of movements and utilize their own force for the purpose. The main objective of the National Liberation Front of Tripura was to overthrow imperialism, capitalism and neo-colonialism

from Tripura with armed struggle with a view to have a distinct and independent identity of the Bork civilization of Twipra; to liberate the Borokland Twipra complete freedom and transform a People's Republic with a view to establish the true Justice, Liberty, Equality and Fraternity in the State. With a view to achieve this objective of setting up of its own independent government and overthrow the alleged capitalist Government of India, the Constitution provided that it will have its own independent flag, constitution of emblem and official language. To achieve this objective, the Constitution provided that it will resort to even use of force. The Government has also placed on record receipts issued by National Liberation Front of Tripura regarding extortion of money from Panchayat officials and individuals in the name of revenue and tax.

26. A perusal of the statement of the witnesses and on perusal of the affidavits and documents placed on record including the Constitution of National Liberation Front of Tripura and All Tripura Tiger Force, subscription notices and extortion receipts, it is clear that objectives of both the National Liberation Front of Tripura and All Tripura Tiger Force is to establish an independent identity of Borokland Tripura as well as separate country comprising of the seven North-Eastern States. The area

of operation of these organizations mainly include West Tripura, Dhalai, North and South Tripura. These organizations possess sophisticated fire arms procured from illegal sources. They are continuing to follow the policy of secession from India; they are continuing to indulge in activities pre-judicial to the sovereignty and integrity of India and indulging in violence and terror through armed action with a view to achieve their objective. They are also indulging in extortion and illegal tax collection from public including businessmen, traders and even Government employees and they have links with and support of other North-East insurgent groups. They are continuing to maintain sanctuaries, safe havens, training camps in neighbouring Bangladesh and are procuring large number of sophisticated arms and ammunitions through clandestine channels or by snatching from various security forces. The organizations are indulging in killing of civilians, armed personnel and are resorting to looting, extortion and other criminal acts and are thus creating a climate of lawlessness.

27. The 'Unlawful Association' has been defined in Section 2(g) of the Act as under:-

“(g)”unlawful association” means any association---

- i. which has for its object any unlawful activity, or which encourages or aids persons to undertake any unlawful activity, or of which the members undertake such activity; or
- ii. which has for its object any activity which is punishable under section 153A or section 153B of the Indian Penal Code (45 of 1860), or which encourages or aids persons to undertake any such activity, or of which the members undertake any such activity.”

‘Unlawful Activity’ has been defined in Section 2(f) of the Act as under:-

“(f)”unlawful activity,” in relation to an individual or association, means any action taken by such individual or association (whether by committing an act or by words, either spoken or written, or by signs or by visible representation or otherwise),---

- i. which is intended, or supports any claim to bring about, on any ground whatsoever, the cession of a part of the territory of India or the secession of a part of the territory of India from the Union, or which incites any individual or group of individuals to bring about such cession or secession;
- ii. which disclaims, questions, disrupts or is intended to disrupt the sovereignty and territorial integrity of India;”

28. From a perusal of the evidence produced on record, it is manifest that both the aforesaid organizations, namely, National Liberation Front of Tripura and All Tripura Tiger Force

and are resorting to acts of killing of civilians, army and police personnel, extortion of funds from public and traders in Tripura from procuring sophisticated arms and ammunitions through clandestine channels or by snatching from various security forces. The organizations have links with and support of other north eastern secessionist insurgent groups. The aims and objectives of both the organizations are to secede from India and to form a separate State of Tripura or in any case a sovereign State of all the seven North-Eastern States including Tripura. It is also proved from the material on record that if these organizations are allowed to continue with their activities, they will indulge in insurgent and unlawful activities. Both the organizations are indulging in various violent activities of extortion, looting and are creating a climate of lawlessness in the State of Tripura. Their activities are intended to disrupt the sovereignty and territorial integrity of India and if they are not checked, not only that the unlawful activities will increase but also an atmosphere may be created in the State for secession from India. Their activities are thus a clear threat to the sovereignty and integrity of the country. The organizations are advocating and practicing the secession of a part of the territory of India from the Union and are inciting the individuals and

groups of individuals to bring about such cession or secession from the country. Their activities clearly amount to unlawful activities as defined under Section 2(f) of the Act.

29. From the material brought on record in the shape of various affidavits, documents, reports of various authorities and the depositions made before the Tribunal, it is manifest that the above named associations, namely NLFT and ATTF have been engaging in the following unlawful activities at a large scale:-

- a) wholesale killings of civilians and personnel belonging to the Police and Security Forces;
- b) extortion of funds from the public including businessmen and traders in Tripura;
- c) procuring large number of arms and ammunitions, including sophisticated ones, through clandestine or illegal channels and inducting them secretly into Tripura through a neighbouring country;
- d) establishing and maintaining camps in a neighbouring country for the purpose of safe sanctuary, training, procurement of arms and ammunitions, etc.;

- e) establishing and maintaining linkages with other Tripura tribal extremist groups for causing and fomenting communal clashes between the tribal and non-tribal communities in Tripura.

30. These activities attributed to the above named associations clearly amount to unlawful activities within the meaning of Section 2(f) of the Act. The associations pursuing such activities are, therefore, undoubtedly unlawful associations within the meaning of Section 2(g) of the Act. Therefore, the Central Government was fully justified in declaring the said NLFT and ATTF as the unlawful associations. This Tribunal see no reason why this declaration should not be confirmed.

31. For the foregoing reasons, I am satisfied that there was sufficient cause for declaring the National Liberation Front of Tripura and the All-Tripura-Tiger Force as unlawful associations. This Tribunal, accordingly, confirm the declaration made by the Central Government vide notification dated 3rd October, 2003 issued under sub-section (1) of Section 3 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967.

(R.C. Jain, J.)

Tribunal Under the Unlawful
Activities (Prevention) Act, 1967

March, 24, 2004

[F. No. 9/6/2003-NE-I]

RAJIV AGARWAL, Jt. Secy.